ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 | अंक-13 | अक्टूबर-I-2018 | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 10.00

'इनर स्पेस' करायेगा इनर वर्ल्ड का साक्षात्कार

दादी ने किया इनर स्पेस का उद्घाटन

हैदराबाद। शांति सरोवर के गोल्डन जुबली सेलिब्रेशन के अवसर पर लोगों को मॉडर्न मेडिटेशन की सुविधा प्रदान करने हेतु ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी द्वारा एक भव्य 'इनर स्पेस' बिल्डिंग का भी उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर तेलंगाना के उपमुख्यमंत्री मोहम्मद महमूद अली, तेलंगाना लेजिस्लेटिव काउंसिल के चेयरमैन स्वामी गौड़, पूर्व यूनियन मिनिस्टर बंडारू दत्तात्रय, ब्र.कु. मृत्युंजय आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

'इनर स्पेस' के बारे में...

'इनर स्पेस' अपने भीतरी ज्ञान की खोज करने के लिए एक प्रवेश द्वार की तरह है। जहां मेडिटेशन हेतु कई आधुनिक सुविधायें हैं जो ब्रह्माकुमारीज़ के शांति सरोवर परिसर के लिए एक नवीन और अद्भुत चीज़ है।

यहाँ भरपूर जगह और बेहद को महसूस करने हेतु इसे बहुत खुला और आरामदायक बनाया गया है और इसकी छत भी बहुत ऊँची बनाई गई है। ये चारो ओर से सुंदर दृश्यों जैसे वृक्ष तथा बगीचों से घिरा हुआ है। ये आध्यात्मिक शिक्षण तथा योग की गहन अनुभूति हेतु एक उत्तम स्थान है जहां हम स्वयं को रिलैक्स, रीचार्ज और रीडिस्कवर कर सकते हैं।

इस भवन का निर्माण विशेष रूप से मॉडर्न सोसायटी तथा यंगर जनरेशन को लॉजिकल एवं साइंटिफिक रूप में स्पीरिचुअलिटी तथा मेडिटेशन को समझाने हेतु किया गया है।

दादी के साथ 'इनर स्पेस' का उद्घाटन करते हुए उपमुख्यमंत्री मो. महमूद अली तथा अन्य।

इनर स्पेस की विशेषतायें :

एक सुंदर मेडिटेशन रूम- इनर सेल्फ की लेबोरेट्री, जहाँ शीतलता तथा मधुरता की अनुभूति हेतु एक बहुत खूबसूरत तालाब का निर्माण किया गया है।

क्लासी डिस्प्ले रूम, जहाँ प्राचीन राजयोग मेडिटेशन की विभिन्न अवधारणाओं को सुंदर चित्रकारियों द्वारा दर्शाया गया है। जिससे हमें पता चलता है कि प्राचीन राजयोग कैसे आज के समाज और आज के रहन सहन में भी मददगार है।

स्टेट ऑफ आर्ट-ऑडियो विज़ुअल रूम, जहाँ एक सौ चालीस लोगों के बैठने और सुंदर योगानुभूति करने हेतु बड़े त्री-डी प्रोजेक्शन सिस्टम की व्यवस्था है।

त्री-एस ज़ोन- सिनर्जी ऑफ साइंस एंड स्पीरिचुअलिटी, जहाँ आध्यात्मिक अवधारणाओं को साइंटिफिक रूप से जानने की व्यवस्था है।

इसके साथ ही त्री-एम ज़ोन : माइंड, मैटर एंड मेडिटेशन, स्पीरिचुअल लाइब्रेरी, एक्सक्ल्यूज़िव कोर्स रूम्स तथा लिटरेचर काउंटर की भी व्यवस्था है।

गौरव यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री ने लिया दादी से आशीर्वाद

शांतिवन। राजस्थान गौरव यात्रा के आबू रोड पहुंचने पर मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया ने ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिक राजयोगिनी दादी जानकी जी से स्नेह मुलाकात की। इस दौरान दादी ने शॉल, श्रीफल और परमात्म बैज पहनाकर मुख्यमंत्री का सम्मान किया। साथ हैं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. मुन्नी दीदी।

हादसे रोकने में अध्यात्म और योग को बताया ज़रूरी

यातायात प्रभाग के चार दिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन का सफल आयोजन

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात प्रभाग द्वारा 'स्पीड, सेफ्टी, स्पीरिचुअलिटी' विषय पर आयोजित चार दिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर संगठन की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने वीडियो संदेश के जरिए अतिथियों को अध्यात्म की गहराई में जाने को प्रेरित किया। जिसके पश्चात् सम्मेलन की शुरुआत हुई। पश्चिमी रेलवे चीफ कमर्शियल मैनेजर इति पांडेय ने कहा कि राजयोग से मन की एकाग्रता बढ़ने से कार्यक्षमता में भी वृद्धि होती है।

केंद्रीय रेवले मुख्य टेलिकॉम अभियंता एस.पी. उपाध्याय ने कहा कि कम समय में लंबी यात्रा की चाह बढ़ने से तनावजन्य परिस्थितियों में भी इज़ाफा हो रहा है। ऐसी स्थिति में समुचित सुरक्षा व्यवस्था के लिए मानसिक धरातल को अध्यात्म के ज़रिए शान्ति से परिपूर्ण करने की ज़रूरत है।

प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. दिव्यप्रभा ने कहा कि हर मनुष्य को जीवन में आध्यात्मिकता की इच्छा होती है, लेकिन वैसा माहौल उपलब्ध न होने से मनुष्य के स्वभाव, संस्कार विकृत होने लगते हैं। एस. प्रमिला, डी.आई.जी., राजस्थान पुलिस (ट्रेनिंग) जयपुर ने कहा कि दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए मन को समर्थ व सकारात्मक सोच से भरना होगा। इसके लिए राजयोग कारगर माध्यम है। दुर्घटनाओं से आर्थिक हानि के साथ परिवार भी बिखर जाते हैं।

हरियाणा टूरिज़्म कॉर्पोरेशन महाप्रबंधक दिलावर सिंह ने कहा कि टूरिज़्म के लिए तीन बातें अट्रैक्शन, एकॉमोडेशन व ट्रैवल जरूरी होती हैं, उसी तरह से जीवन के टूरिज़्म में सेफ्टी, स्पीरिचुअलिटी, सही स्पीड को संतुलित रखने के लिए अध्यात्म को अपनाना आवश्यक है। प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. कुंती ने कहा कि ज़िंदगी के रिश्तों की डोर में माधुर्य बनाए रखने, जीवन को विकृतियों से सुरक्षित रखने के लिए नियमों का पालन ज़रूरी है। एन.टी.पी. कॉर्पोरेट डायरेक्टर पूजा मेहरा, प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. सुरेश, राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. बिन्दू, ब्र.कु. मोतीलाल आदि ने भी जीवन को मूल्यों से संवारने के लिए अध्यात्ममय जीवनशैली के सूत्र बताये।

कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. कुंती, इति पांडेय, पूजा मेहरा, एस.पी. उपाध्याय, ब्र.कु. दिव्यप्रभा, ब्र.कु. सुरेश तथा अन्य गणमान्य अतिथि।

शारीरिक स्वास्थ्य के लिए सकारात्मक विचार पर दादी जानकी ने दिया ज़ोर

'माइंड, बॉडी व मेडिसिन' पर त्रिदिवसीय सम्मेलन में हज़ारों चिकित्सक हुए शरीक

अधिकतर व्याधियों की उत्पत्ति कमज़ोर मन की रचना

दादी जानकी, डॉ. अर्चना ठाकुर, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. बनारसी, ब्र.कु. मृत्युंजय तथा अतिथिगण।

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि बदलती जीवनशैली को देखते हुए मन को धैर्यवान बनाने की बहुत ज़रूरत है। किसी भी बात को लेकर मन में हलचल नहीं होनी चाहिए। हमेशा सकारात्मक विचारों को प्राथमिकता देकर मन को मेडिटेशन द्वारा पवित्र बनाने से व्याधियों से तन अप्रभावित रहता है।

दादी चिकित्सा सेवा प्रभाग द्वारा 'माइंड, बॉडी व मेडिसिन' विषय पर आयोजित सम्मेलन में देश भर से आये चिकित्सकों को सम्बोधित कर रही थीं।

दिल्ली जी.बी. पंत अस्पताल निदेशक डॉ. अर्चना ठाकुर ने कहा कि जिस प्रकार घोर अंधकार को मिटाने में एक छोटी सी ज्योति पर्याप्त है, उसी प्रकार मन की बीमारियों के अंधकार को मिटाने के लिए आत्मज्योति को आलोकित करने की ज़रूरत है।

अवेकनिंग विद् ब्रह्माकुमारीज़ फेम व जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि अधिकतर व्याधियों की उत्पत्ति मानव अपने कमज़ोर मन से करता है। नकारात्मक संकल्प बीमारियों को आमंत्रित करते हैं। सकारात्मक सोच व दृष्टिकोण से मन में अलौकिक ऊर्जा की रचना बढ़ती है। चिकित्सा प्रभाग उपाध्यक्ष मनोचिकित्सक डॉ. गिरीश पटेल ने कहा कि इस संसार के विचारों की दुनिया से परे निर्विचार की दुनिया की अनुभूति करने से कर्मक्षेत्र के हर कर्म यथार्थ होने लगेंगे। आध्यात्मिक विचारों के आकाश में उड़ान भरने से अद्भुत परमात्म शक्तियों की वर्षा होने से मन का मैल धुलने लगेगा।

ग्लोबल अस्पताल निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा ने विभिन्न विषयों पर होने वाली चर्चा की जानकारी दी।

चिकित्सा प्रभाग सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह ने कहा कि वसुधैव कुटुम्बकम की इच्छाओं को मन में स्थान देने से विश्वकल्याण की भावनाओं को मूर्तरूप दिया जा सकता है।

शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि तन के दर्द को मिटाने के लिए दवाई तो नज़र आती है, लेकिन मन के दर्द से छुटकारा प्राप्त करने का मेडिटेशन ही एकमात्र दवाई है। कार्यक्रम में ग्लोबल अस्पताल के मधुमेह विशेषज्ञ डॉ. श्रीमंत साहू, ग्लोबल अस्पताल फिज़िशियन डॉ. सचिन सुखसोले, मुम्बई से आईं डॉ. अल्पा शाह, जलगांव के परेश, हैदराबाद से आए के. क्रांतिश्री व डॉ. नीता पटेल ने भी विचार व्यक्त किये।

'माइंड, बॉडी, मेडिसिन' विषयक सम्मेलन में उपस्थित हैं देश भर से आये हज़ारों वरिष्ठ चिकित्सक।

ऐसे मनायें दीपावली

दीपावली की तैयारी हम कई दिन पूर्व से ही करते हैं। जैसे कि घर की साफ सफाई करना, घर की दीवारों को पेंट करना, घर के लिए नया सामान और नये कपड़े खरीदना आदि। इसका मतलब ये है कि दीपावली के बाद हम जैसे कि एक नये युग में प्रवेश करते हैं, जहाँ सबकुछ नया ही नया है। नवीनता को जीवन में अपनाना मनुष्य का स्वभाव है। पर सोचने की बात है कि दीपावली हो जाने के बाद सब चीज़ें तो नई हो गईं, परन्तु क्या हमारे रहन-सहन में, व्यवहार में या सोच में नयापन रहता है? यदि नहीं, तो फिर वही का वही दफ्तर, दोस्त, कर्मक्षेत्र। तब तो भला दीपावली के पूर्व में हमने जो नया किया, वो तो केवल रीति रस्म ही निभाई। इससे हमारे जीवन में कोई बदलाव नहीं आया। विचार करने की बात ये है कि ये सब इतनी सारी तैयारियां करने के बाद भी हमारे जीवन की चाल चलन वैसी की वैसी है, तो फिर तो हमने बस अच्छे अच्छे खाद्य पदार्थ का सेवन किया, नये कपड़े पहने, लेकिन हमारे सोचने का ढंग तो पुराना ही रह गया।

दीपावली के दिन विशेष तौर पर दीया जलाते हैं। माना कि रोशनी से चारो ओर हमारा घर रोशनदान बन जाता है। चारो तरफ रोशनी ही रोशनी नज़र आती है। जहां रोशनी है, वहां उमंग उत्साह का संचार होता रहता है। तो हमारे जीवन में भी तो रोशनी सदा बनी रहनी चाहिए ना। लेकिन अधिकांशतः ऐसा देखा नहीं गया है। दीप को दीया भी कहते हैं। दीया माना ही देना, जो कि देवत्व का लक्षण है। किसी के प्रति शुभ भावना रखना, शुभ कामना करना, आगे बढ़ें, उनका जीवन सुखदायी हो, ये हुआ देना। और यही लक्षण है देवताओं का। जब हम ऐसी भावनाओं,

- ब्र.कु. गंगाधर

ऐसी समझ व ज्ञान से अपने जीवन को रोशन बनाये रखेंगे, तब ही हमारा जीवन भी सबके लिए रोशनदान की तरह होगा। तो दीपावली में आत्मदीप के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए उसकी वास्तविकता को समझना ज़रूरी है।

वैसे देखा जाये तो सभी को जीवन में सात बातों की आवश्यकता बनी रहती है। हर मज़हब, हर जाति को इन सात बातों की आवश्यकता जीवन में पड़ती है। पर मज़े की बात तो ये है कि जिसके लिए हम सारा दिन दौड़ भाग कर रहे हैं, वो हमारे पास पहले से ही मौजूद है। जब हमको परमात्मा ने इस धरा पर भेजा, तो सातों खज़ाने प्रचुर मात्रा में सबको एक समान दिये। वह है सुख, शांति, प्रेम, आनंद, ज्ञान, शक्ति, पवित्रता। हर कोई इसी को प्राप्त करने के लिए तो सुबह से शाम तक दौड़ रहा है, भाग रहा है। ये सत्व गुणों का खज़ाना आत्मा में मौजूद है। तभी तो आत्मा को सत् चित् आनंद स्वरूप कहते हैं। सत् माना जो सातों गुणों का व्यवहार में उपयोग करता है, वही सत् चित् आनंद स्वरूप में रह सकता है। इसमें से एक भी गुण की कमी है तो हम जीवन में खुशी व उमंग उत्साह में नहीं रह सकते। अगर सातों गुण हमारे जीवन में झलकता है, पनपता है, तभी तो आत्मदीप जगा हुआ कहेंगे ना। नहीं तो कभी अशांति, कभी दुःख, कभी उदासी के अंधकार में ही हम जीवन को काटते रहेंगे। अब प्रश्न उठता है कि ये सातों गुण कैसे हमारे जीवन में निरंतर प्रवाहित हों? वर्तमान समय हमारा जीवन इन उलझनों के मध्य फँसा हुआ है कि हम चाहते तो हैं कि हमारे जीवन में शांति हो, खुशहाली हो, पर इतनी मेहनत करने के बाद भी ऐसा हो नहीं पा रहा है। सुबह से रात तक जिसे प्राप्त करना चाहते हैं, वो हमारे से और ही दूर होता चला जाता है। पर हम विचार करें कि हम जिस पद्धति से जी रहे हैं, उसमें बदलाव तो करना ही होगा, अन्यथा तो इस कुचक्र से कैसे छुटकारा मिलेगा? तो अभी एक काम इस दीपावली के शुभ मौके पर करके देखें कि हमारा जीवन सुबह से शाम तक कैसे चल रहा है, उसमें हम बदलाव करें। कहते हैं जिसकी सुबह अच्छी, उसकी शाम अच्छी, उसका दिन अच्छा, उसका मास अच्छा, उसका वर्ष अच्छा और उसका जीवन ही अच्छा। इसके लिए बस सुबह की शुरुआत हम अपनी शक्तियों को, अपनी योग्यताओं को, अपनी संभावनाओं को, विशेषताओं को शांति से बैठकर अपने में देखें। फिर दिन की शुरुआत करें। साथ ही साथ परमात्मा की शक्तियों को अपने जीवन में स्थान दें। तब हमारे जीवन में हम ऊर्जा महसूस करेंगे और सबके प्रति देने का दीया जलता रहेगा। और जो देंगे, वही तो हमें मिलेगा ना। कहते हैं ना, जो देते हैं, वही लौटकर आपके पास आता है। आपने सबके प्रति शुभ भावनायें, शुभ कामनायें की, तो आपको वो दस गुना बनकर वापिस मिलेंगी। जैसे एक बीज अगर हम ज़मीन में बोते हैं, तो सैकड़ों बीज उससे निकलते हैं ना। इसी तरह हम भी इस दीपावली पर एक नया प्रयोग कर जीवन जीना आरंभ करें। हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आपका जीवन सदा ही ज्ञान, गुण, शक्तियों से रोशन होता रहेगा। ना सिर्फ आपका जीवन रोशन होगा, बल्कि आप दूसरे को भी एक आदर्श के रूप में रोशनी देते रहेंगे। ठीक है ना। ये तो कर सकते हैं ना। ये दीपावली सिर्फ पटाखे या स्थूल मोमबत्ती जलाकर ही मनायेंगे क्या कि दीपावली गयी और आपके जीवन में वही अंधकार बना रहे। क्या चाहेंगे आप? वर्तमान समय चारो ओर दुःख अशांति के अंधकार में घिरा मानव कहीं रोशनी की चिंगारी भी देख नहीं पाता, पर आज के संसार के हालात को हम देखते हैं तो हमें ऐसा लगता है कि ज़रूर अभी परमात्मा के आने का समय है। कहते हैं ना, यदा यदाहि धर्मस्य...। हम चारो तरफ देख भी रहे हैं और समझ भी रहे हैं, लेकिन निकलें कैसे? उसके लिए आप अपने नज़दीकी ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेन्द्र में आकर परमात्म ज्ञान को समझें और अपने जीवन की प्रयोगशाला में प्रयोग कर इसे अपनायें।

निश्चय बुद्धि विजयंती, ज़रा भी संशय या क्वेश्चन न हो

एक बारी साकार में बाबा ने मुझे कहा कि जितना तुम मुझे याद करोगी, उतना बाबा तुम्हारे साथ रहेगा। अगर मैं कहूँ कोई मेरी ग्लानि करता है, कुछ भी करता है तो ज़रा सी फीलिंग आई, चेहरे पर आई, यह गलत है। ऐसी गलतियां करते रहने से न दुआ ले सकेंगे, न दुआ दे सकेंगे, इसलिए बाबा कहता है याद करो तो विकर्म विनाश हो जावे, पर यदि विकर्म बन गया तो वो विनाश कैसे होगा? कहेंगे यह पूर्व जन्मों का कोई हिसाब किताब नहीं, ऐसा मुझे लगता है, शरीर में आत्मा को खुशराज़ी रहना है, इसलिए शरीर में बैठी है। मैं तीन बारी ओम् शांति किसलिए कहती हूँ, यह सारे देश विदेश में मशहूर हो गया है। मैं हूँ आत्मा, मेरा है परमात्मा। मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, मेरा स्वधर्म शान्त है। धरत परिए धर्म न छोड़िए। मुझे क्या करने का है? जैसे भगवान चलाता है वैसे चलते रहना है।

यह जीवन मरजीवा जन्म है, जीते जी मरना। ज़रा भी लौकिक का भान उनसे नहीं आयेगा, यह फलाने की बेटी है या बहन है या फलाना है, कोई नहीं। न नाम, न रूप, न देश...। जहाँ भी होंगे, कहेंगे हम तो मधुबन निवासी हैं ना। जब से बाबा ने यज्ञ की स्थापना की, तब से साइंस ने भी विनाश की तैयारी करना शुरू कर दिया। तभी से इन्वेन्शन होने लगे, नहीं तो यह बिजली आदि पहले नहीं थी। अभी यह माइक रखा है, यह लाइटें हैं... यह सब साइंस की कमाल है। परंतु साइंस विनाश काल नज़दीक ला रही है, तो सारी दुनिया में यह आवाज़ पहुंचना चाहिए, विनाश काले निश्चय बुद्धि विजयंती, ज़रा भी संशय न हो, क्वेश्चन न हो। इतना अच्छा ड्रामा का ज्ञान होते भी कोई प्रकार का क्यों, क्या, कैसे होगा..., मुख ऐसे बोले, अभी यह अच्छा नहीं लगता है, शोभा नहीं देता है। इसमें तुम्हारा क्या जाता, तुमको जो करना है सो कर लो। यह सेल्फिश नहीं है पर सच्ची दिल है। जो पुरुषार्थ करेंगे ऑटोमेटिकली दूसरे को ऐसा पुरुषार्थ करने का दिल से उमंग आयेगा। गोप गोपियों, पुरुषार्थियों को खुशी न हो, तो मज़ा नहीं है। बाबा को फॉलो करना, बाबा जैसे सिखाता है, न किसी को दुःख दो, न लो। कभी भी दुःख न लो।

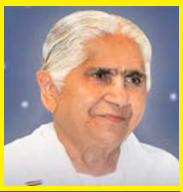

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

अपनी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति... जैसा अंदर सिमरण होता है, वैसी वृत्ति होती है, वैसी दृष्टि होती है। कितना सुख मिलता है, बाबा गोद बिठाके, गले लगाके पलकों पर बिठाके ले जा रहा है। पहले ऐसे दृष्टि देने-लेने का ज्ञान नहीं था, पर शान्ति बाबा में ऐसी थी, एकदम आत्मा शान्त हो जाती थी याद में। बाबा शान्ति का सागर है, शान्तिधाम में जाना है। अभी अभी जाना है, उसके लिए तैयार बैठे हैं। दीदी को कुछ भी बोलते तो कहती थीं, अब घर जाना है, अब घर जाना है। तो जो शब्द हमारे दीदी-दादियों के रहे हैं, वही अभी हमारे भी हों।

हर कर्म करते आत्मिक स्मृति रहे

शिव बाबा कहते हैं कि अन्त में एक सेकण्ड का पेपर होगा- स्मृतिर्लब्धाः, नष्टोमोहा। कर्मेन्द्रियों से सुनने, देखने, बोलने और सोचने का भी तो मोह होता है। नष्टोमोहा माना सम्बंधियों या वैभवों से, चीज़ों से ज़रा भी मोह नहीं। अपने शरीर की कोई भी कर्मेन्द्रियाँ अगर खींचती हैं माना मोह है, उससे प्यार है। तो नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप कैसे होंगे? तो इसके लिए एक सहज अभ्यास है कि हम चाहे कितने भी बिज़ी रहते हैं, लेकिन ये स्मृति हर पल रहे कि मैं आत्मा मालिक इन कर्मेन्द्रियों से यह काम करा रही हूँ। जैसे कोई डायरेक्टर, बॉस होता है- वह अपने ही कमरे में एक कुर्सी पर बैठा रहता है। परंतु उसको यह नैचुरल याद रहता है कि मैं डायरेक्टर हूँ, यह कर्मचारी जो भी मेरे साथी हैं उनसे कराने वाला हूँ। मैं ज़िम्मेवार हूँ। यह तो याद रहता है ना। ऐसे यह भी याद रहे कि मैं आत्मा करावनहार हूँ और यह कर्मेन्द्रियाँ जो हैं, मेरी कर्मचारी हैं यानि साथी हैं। मददगार तो यह कर्मेन्द्रियाँ ही हैं। लेकिन मैं मालिक हूँ, कराने वाला हूँ। मालिक कहने से आत्मा अलग हो जाती है, शरीर अलग हो जाता है। यह प्रैक्टिस हम बीच-बीच में काम करते भी करें, यह नशा रखें कि मैं आत्मा करावनहार हूँ या मैं आत्मा मालिक हूँ। मालिकपन आयेगा तो न्यारापन ऑटोमेटिक होगा। कराने वाला मैं हूँ और यह करने वाली हैं तो डायरेक्शन से ज़रूर चलेंगे। अगर कोई डायरेक्शन प्रमाण नहीं चलते हैं तो समझेंगे कि यह तो नहीं चल सकेगा। तो कर्म छोड़कर नहीं, लेकिन कर्म करते हुए यह याद करना है कि मैं कराने वाली आत्मा मालिक हूँ, यह कर्मेन्द्रियाँ अलग हैं, फिर कंट्रोल करना सहज है। यदि मालिक को मालिकपन ही याद नहीं होगा तो सर्वेन्ट मानेगा कैसे। कम्पनी के डायरेक्टर जो होते हैं वह अपने वर्कर्स को कितना बिज़ी रखने की कोशिश करते हैं, तो मैं भी मालिक हूँ तो इन कर्मेन्द्रियों को क्यों नहीं बिज़ी रखूँ। दूसरा मैं मालिक हूँ तो विदेही यानि देह से न्यारे का अभ्यास नैचुरल होता जाता है। कर्म करते हुए यह अभ्यास करते रहो तो आपका लिंक जुटा रहेगा। और लिंक जुटा हुआ होने के कारण फिर जब आपको फुर्सत मिलती है उस समय आप विदेही बन जाओ। लेकिन विदेही मतलब यह नहीं है कि चींटी ऊपर चढ़े तो पता ही नहीं पड़े। लेकिन जैसे कोई बहुत डीप विचार में होते हैं, कोई बात में बहुत रूचि होती है सुनने की, देखने की तो उस समय बाहर कुछ भी होता रहे फिर भी हमारा अटेन्शन नहीं जाता है। समझो मैं खाना खा रही हूँ और मेरा कुछ विचार चल रहा है, जिसमें मेरा पूरा ध्यान उसी विचार में है तो खाना तो मैं मुख में ही डाल रही हूँ, लेकिन अगर कोई मेरे से पूछे कि आज नमक ठीक है? तो आप जवाब नहीं दे सकेंगे क्योंकि आपका विचार जो है वह दूसरे तरफ इतना डीप था जो आपने खाया भी लेकिन खाते हुए भी आप न्यारे रहे। ऐसे ही अगर हम देह में होते हुए अपने ही मनन चिंतन में हैं, मालिकपने के नशे में हैं तो मुझे यह कर्मेन्द्रियाँ क्यों आकर्षित करेंगी? नहीं कर सकती हैं। इसमें काम को छोड़ने की बात नहीं है। काम करते हुए मालिकपन चाहिए। तो कर्म भी अच्छा होगा और विदेहीपन का अभ्यास भी पक्का होता जायेगा। एकान्त में इसका अभ्यास और अच्छी तरह से कर सकते हैं। भिन्न-भिन्न स्वमान का नशा और खुशी रहे तो भी मालिकपने की स्मृति और पक्की होती जायेगी। और इससे याद ऑटोमेटिकली आ जायेगी, क्योंकि जितना आप मालिकपन में रहेंगे तो कर्मेन्द्रियां धोखा नहीं देंगी। और मैं आत्मा हूँ, यह पक्का होता जायेगा। मालिक हूँ, आत्मा हूँ। तो शिवबाबा की याद बहुत सहज हो जायेगी, क्योंकि मैं भी अशरीरी वह भी अशरीरी। बीच में पर्दा है यह शरीर का, इसलिए योग नहीं लगता है। और जब मैं आत्मा मालिक अशरीरी हूँ और बाबा भी अशरीरी है तो एक जैसे हो गये। तो कनेक्शन बहुत जल्दी हो जायेगा यानि योग जल्दी लग जायेगा। जब देह से अलग होते जायेंगे, होते जायेंगे तो वैराग्य क्या बड़ी बात है। मालिकपने के नशे और खुशी के रस के आगे यह जो भी लगाव की चीज़ें हैं वह ऐसी लगेंगी जैसे बिल्कुल फीकी हैं, कुछ भी नहीं हैं। और अलग अलग मेहनत करने से बच जायेंगे।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

हो आत्मसम्मान, तो सब देंगे सम्मान

दुनिया में कहा जाता है, तुम प्यार करो तो सब करें। कहते मैं तो सबको प्यार देता, लेकिन आगे वाला मुझे ठुकराता। इसमें हमेशा समझो यह मेरा हिसाब-किताब है। 63 जन्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करना है। जहाँ प्यार होगा वहाँ सब मान देंगे। शुभ भावना रहेगी, शुभ चिंतन चलेगा फिर उनके लिए मेरा वरदान रहेगा। अगर मैं इस स्थिति में रहूंगी तो सब मेरी स्तुति करेंगे। अगर मैं ही अपनी स्थिति में नहीं रहती तो कोई मेरी क्या स्तुति करेगा।

हरेक अपने से पूछे- पहले मेरी स्तुति मेरे 8 मंत्री 'कर्मेन्द्रियां' करते हैं? जो मुझ आत्मा का संस्कार है वह संस्कार मेरी स्तुति करता है? जब मेरा संस्कार मेरी स्तुति करे, अर्थात् ऑर्डर में रहे तब दूसरे भी स्तुति करेंगे। बाबा ने कहा 3 मंत्री हैं मुख्य। मन बुद्धि और संस्कार। तो मेरा मन सदा मेरे चरणों में रहता अर्थात् मैं जो पवित्र आत्मा हूँ, मेरा मन सदा ऐसा ही स्वच्छ पवित्र और सदा ऊँचा रहता है? मेरा पहला मंत्री मेरे ऑर्डर में है? ऑर्डर में है तो शुद्ध संकल्प स्वतः रहेंगे। फिर यह क्यों आता मेरा यहाँ अपमान हुआ! यह संकल्प उठाना भी तो अशुद्धता है। अपने से पूछो मैं अपनी महानता की ऊँची स्थिति पर रहता हूँ? जब मैं उसी स्थिति पर रहूंगी तब सभी मेरा मान करेंगे। कई कहते हैं मेरी वृत्ति अच्छी नहीं, मेरी वृत्ति चंचल होती है, अगर मैं यही रिपोर्ट करती तो मैं दूसरे से क्या मान मांगूँ? पहले तो अपनी रिपोर्ट बंद करो। तुम पहले अपने मंत्री से तो प्यार पाओ, पीछे दूसरे से मांगो। अगर वृत्ति चंचल है माना मंत्री कंट्रोल में नहीं है। कहते हैं दक्ष प्रजापिता ने यज्ञ रचा। अब दस शीश वाले रावण को स्वाहा करने के लिए हमारे बाबा ने यह रूद्र यज्ञ रचा है। इसमें ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बच्चों ने अपना सब कुछ स्वाहा कर दिया। तो हरेक पूछे मैंने अपने दस राक्षसों को स्वाहा किया है? इन्द्रियजीत बनने का मतलब है अपनी कर्मेन्द्रियों को दिव्य बनाना। तो चेक करो कि मेरे कान दिव्य बने हैं? या अभी तक कनरस सुनने का शौक है? परचिंतन पतन की ओर ले जयेगा। फिर ऐसा परचिंतन वाला मान पा सकता है? हमारे यह नयन दूसरे को प्यार की भावना से, भाई-भाई की दृष्टि से, बाबा के रत्न देखने के लिए हैं। अगर यह नयन बुरी दृष्टि से देखते, द्वेष की दृष्टि से देखते तो क्या यह नयन मुझे मान देंगे। अगर नयनों ने बुरे नज़र से देखा, द्वेष दृष्टि डाली तो मेरे नयन ही मुझे अपमानित करते। दुःख देते, फिर दूसरे से मान कैसे मिलेगा।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

कहते यह मुझे इतना प्यार नहीं देता। मैं पूछती तुमने अपने को कितना प्यार किया? मैं अपने संकल्प को शुद्ध रखूंगी तो प्यार मिलेगा। मेरी बुद्धि अगर परचिंतन में घूमती, सत्यता को छोड़, स्वच्छता को छोड़ असत्यता की ओर जा रही है तो पहले मेरी बुद्धि ने ही मुझे प्यार नहीं दिया। अगर बुद्धि ही प्यार नहीं करती तो दूसरे क्या करेंगे। पहले देखो : मेरे संस्कार मुझे सिस्पेक्ट देते हैं? मैंने अपने संस्कारों की चंचलता को स्वाहा किया है? अगर मेरे संस्कार ही मुझे रिस्पेक्ट नहीं देते तो दूसरे क्या देंगे।

खुशियों की बहार लाया दीपों का त्योहार

आने वाले समय में बहुत कुछ बदलने वाला है, लेकिन क्या बदलने वाला है? कैसे बदलेगा? इसके आधार क्या होंगे? इन चीज़ों को समझना आसान नहीं होगा, क्योंकि दीपावली सिर्फ एक त्यौहार नहीं, एक उत्सव

नहीं, बल्कि आने वाले समय की प्रत्यक्षता है। है ना यह एक मार्मिक बात! जिसमें कुछ ऐसे रहस्य छिपे हुए हैं, जिन्हें हमें समझने की ज़रूरत है।

अमावस्या की काली घनी रात को एक छोटे से दीपक की रोशनी से भगाते हैं सभी। लेकिन ये अमावस्या की रात का प्रसंग क्या उस दीपावली के दिन के लिए विशेष है? या इसकी कड़ी कहीं और से जुड़ी हुई है? साल में सिर्फ एक बार दीपक जलाते हैं और पूरे साल हम ऐसे ही बैठे रहते हैं। हर महीने कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष आता है। हर महीने शुक्ल पक्ष में तो आप दीपक नहीं जगाते! अब हम इसे थोड़ा समझने की कोशिश करते हैं।

दीपावली आने से पूर्व हम अपने घरों के कोने-कोने की सफाई करते हैं ना! ऐसी मान्यता है कि सफाई जहाँ होती है वहाँ लक्ष्मी का वास होता है। अब घर की सफाई का कनेक्शन धन से कैसे है? बहुत सारे लोग ऐसे हैं जिनके घरों में सफाई नहीं है, परन्तु उनके पास बहुत पैसा है। यहाँ घर को शरीर के साथ जोड़ सकते हैं और उसमें रहने वाले को आत्मा के साथ जोड़ सकते हैं। जैसे हमारे मन में उल्टे पुल्टे विचार या नकारात्मक विचार बैठे हैं तो वो हमारे शरीर रूपी घर में बीमारी पैदा करते हैं इसलिए सफाई का अर्थ ही यही है। अगर हम अपने मन को अन्दर से साफ करते हैं माना समझ जाते हैं, माना कॉन्शियस हो जाते हैं, तो इससे हमारा ज्ञान धन बढ़ जाता है और जिसके पास ज्ञान का धन है तो उसके पास स्थूल धन तो ऐसे ही आ जायेगा। अब इसमें आप कहोगे कि बहुत से लोग ऐसे हैं कि जिनके घर साफ सुथरे नहीं है, मन साफ नहीं है, उनके पास पैसा भी बहुत है। लेकिन ऐसा नहीं है, वो पैसा गलत तरीके से उनके पास आया है और वो कभी सुख नहीं दे सकता। आपको लगता है कि वो सुखी हैं, लेकिन हैं नहीं। पैसा वो अच्छा है जो पवित्र मन से कमाया गया है। ये तो हो गई मन की सफाई की बात, जहाँ मन का कोना-कोना साफ है वहाँ ज्ञान धन दौड़ कर आयेगा। कहते हैं एक बड़ी दीपावली आती है और एक छोटी दीपावली आती है। छोटी दीपावली से पहले नर्क चतुर्दशी होती है जिसमें एक दीपक जलाकर पूरे घर को दिखाकर, उसे घर से बाहर ले जाकर कूड़ेदान पर रख देते हैं। इसका भावार्थ यह है कि सबकुछ करने से पहले हम इस नारकीय जीवन को समझें, इसे थोड़ा-थोड़ा ज्ञान की रोशनी देकर सबको समझाने का प्रयास करें कि यह जीवन नारकीय है। तब जाके आप पूरी तरह से चमक पायेंगे या जगमगा पायेंगे।

वैसे भी दीपावली में, अर्थात् रामचन्द्र जी की रावण पर जीत पाकर आयोध्या लौटने पर विजय की खुशी में दीप जलाये गये। अब हम सभी राम तो हैं नहीं, और ना ही राम जैसा हमारा कोई कर्म है और ना ही हमने रावण को मारा है और ना ही हमने रावण को जीता है। तो हम किस आधार पर दीपावली मनायें! हम सभी त्यौहार और उत्सव कहकर इसे परम्परा का नाम देकर हर साल दीप जलाकर फिर भूल जाते हैं। अब राम और रावण की कहानी आज की स्थिति से मैच करती है। आज हर घर में रावण हैं। लेकिन रावण कहा किसे जाता है सबसे पहले ये हमारे लिए जानना आवश्यक है। तभी तो हम उस पर जीत पा सकेंगे। ये रावण कोई और नहीं, हमारे अन्दर विराजमान ये पाँच विकार ही (काम, क्रोध, लोभ, मोह,अहंकार) रावण हैं। तो जब हम अपने अंदर के रावण को मारेंगे तभी तो हमारे अन्दर ज्ञान का प्रकाश फैलेगा। लेकिन उस रावण को मारने के लिए उसे पहचानना बहुत ज़रूरी है। हम सभी कर्म तो कर रहे हैं, लेकिन वो कर्म क्या रावण के अंदर बसे अहंकार के वश है या राम के अंदर बसे ज्ञान के वश है। ये आपको चेक करना पड़ेगा। राम का अर्थ ही है जो दिल को आराम दे। तो यहाँ राम भगवान का नाम है, ना कि राम भगवान हैं। तो परमात्मा का एक नाम राम है जो दीपराज है और हम आत्मायें परमात्मा के छोटे-छोटे दीपक हैं। हम दीपकों को परमात्मा राम के साथ मिलकर उन विकारों पर जीत पानी है। तभी दीपावली का सच्चा स्वरूप सार्थक होगा। इसी का यादगार रामचरित मानस में दिखाया गया है कि राम ने बंदरों की सेना तैयार की और रावण पर जीत प्राप्त की। आप सोचिये कि जो बंदर कभी एक जगह टिकते नहीं हैं तो उनकी सेना कैसे तैयार हुई होगी? तो हम आत्मायें ही आज विकार के वश हैं, और बंदरों की तरह ही मोह वश हैं। परमात्मा ही आकर हम सबका मन रूपी दरवाज़ा खोलते हैं और हमारे अंदर ज्ञान की रोशनी लाते हैं। उस ज्ञान की रोशनी से ही हम आत्मायें परमात्मा के साथ रहने को तैयार होती हैं। जब हम ये कर पायेंगे तब ही लंका पर विजय पायेंगे और तभी सच्ची दीपावली की सार्थकता होगी।

नेपाल-काठमाण्डू। माननीय प्रधानमंत्री खड्ग प्रसाद ओली को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राज दीदी। साथ हैं ब्र.कु. रामसिंह तथा अन्य।

जयपुर-वैशाली नगर। माननीय मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड भेंट करते हुए ब्र.कु. सुषमा तथा ब्र.कु. चन्द्रकला।

अरुणाचल प्रदेश-ईटानगर। माननीय मुख्यमंत्री पेमा खांडु को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

अमेठी-उ.प्र.। डी.एम. शकुन्तला गौतम को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुमित्रा। साथ हैं ब्र.कु. सुष्मा।

कानपुर-उ.प्र.। उद्योग विकास राज्यमंत्री सतीश महाना को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता।

आरा-बिहार। जिला अधिकारी संजीव कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. किरण।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। आशीष कुमार सिंह,आई.पी.एस.,डी.आई.जी. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. माला।

अरेराजधाम-बिहार। डी.एस.पी. अजय कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीना। साथ हैं ब्र.कु. रिंकी।

दिल्ली-डेरावल नगर। म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन काउंसलर सीमा गुप्ता को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीत।

अमृतसर-पंजाब। म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन कमिश्नर सोनाली गिरी को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. परवीन।

फरीदाबाद-एन.आई.टी.। एम.सी.एफ. जवाइंट कमिश्नर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूजा।

दिल्ली-शक्तिनगर। नॉर्थ डी.एम.सी. डायरेक्टर रणवीर सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् पौधा भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. प्रीत।

भुवनेश्वर-ओडिशा। राज्यपाल महोदय गणेशी लाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. लीना। साथ हैं ब्र.कु. विजय, ब्र.कु. सबिता, बहन गायित्री, बहन संजुक्ता तथा अन्य।

करनाल-हरियाणा। माननीय मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रेम।

दिल्ली-लॉरेंस रोड। रोमेक्स इंटरनेशनल स्कूल की प्रिन्सीपल शालिनी भट्ट को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सारिका तथा ब्र.कु. रूपलता।

साहिबाबाद-उ.प्र.। थानाध्यक्ष प्रशांत मिश्रा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड एवं प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. विद्या।

दिल्ली-पालम। रक्षाबंधन के अवसर पर थाने में पुलिसकर्मियों को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सरोज।

कैंसर के अचूक उपाय

स्वास्थ्य

वैज्ञानिकों ने ढूंढ़ निकाला कैंसर का सबसे सस्ता इलाज, 2 रुपए की ये चीज़ जड़ से खत्म कर देगी कैंसर....

कैंसर के मरीजों के लिए एक बड़ी राहत वाली खबर आई है। दुनिया भर के वैज्ञानिक जिस बीमारी के लिए सालों से इलाज ढूंढ़ रहे थे, उसका आखिरकार तोड़ मिल चुका है।

अब तक दुनिया भर में कैंसर के इलाज के लिए अरबों रुपए पानी की तरह बहा दिए गए हैं, लेकिन कोई भी दवा पूरी तरह से कैंसर को जड़ से खत्म करने में नाकाम साबित हुई है। अब तक बाज़ार में जो दवाएं मौजूद हैं, वो सिर्फ कैंसर को बढ़ने से रोक देती हैं, लेकिन उसे खत्म नहीं करतीं।

अमेरिका के लडविंग इंस्टीट्यूट फॉर कैंसर रिसर्च में अमेरिकी वैज्ञानिकों के दल ने हाल ही में कुछ नए शोध किए। इस टीम की अगुवाई मशहूर कैंसर वैज्ञानिक और जॉन हॉपकिंग यूनिवर्सिटी के ऑनकोलॉजिस्ट (कैंसर विशेषज्ञ) डॉ. ची. वान. डैंग ने की। उन्होंने कहा कि हम सालों तक रिसर्च कर चुके हैं और अब तक कैंसर के जो भी इलाज मौजूद हैं वो काफी महंगे हैं। हमने जो शोध किया उसमें चौंकाने वाले नतीजे सामने आए हैं। आपके किचन में रखा बेकिंग सोडा कैंसर के लिए रामबाण औषधि है।

डॉ. डैंग के मुताबिक हमने बेकिंग सोडा पर लंबी रिसर्च की और जो परिणाम हमने अब तक सिर्फ सुने थे वो प्रमाणित हो गए। उन्होंने बताया कि यदि कैंसर का मरीज बेकिंग सोडा पानी के साथ मिलाकर पी ले, तो कुछ ही दिनों में इसका असर दिखने लगेगा। उन्होंने बताया कि कीमोथेरेपी और महंगी दवाओं से भी तेज़ी से बेकिंग सोडा ट्यूमर सेल्स को न सिर्फ बढ़ने से रोकता है, बल्कि उसे खत्म कर देता है।

डॉ. डैंग ने पूरी जानकारी देते हुए बताया कि हमारे शरीर में हर सेकेंड में लाखों सेल्स खत्म होते हैं और नए सेल्स उनकी जगह ले लेते हैं। लेकिन कई बार नए सेल्स के अंदर खून का संचार रुक जाता है और ऐसे ही सेल्स एक साथ इकट्ठा हो जाते हैं, जो धीरे-धीरे बढ़ते हैं। इसी को ट्यूमर कहा जाता है। उन्होंने बताया कि हमने ब्रेस्ट और कोलोन कैंसर के ट्यूमर सेल्स पर बेकिंग सोडा के प्रभाव की जांच की और हमने पाया कि बेकिंग सोडा वाला पानी पीने के बाद जिस तेज़ी से ट्यूमर सेल्स बढ़ रहे हैं तो वो काफी हद तक रुक गए।

उन्होंने बताया कि ट्यूमर सेल्स में ऑक्सिजन पूरी तरह खत्म हो जाती है तो उसे मेडिकल भाषा में हिपोक्सिया कहते हैं। हिपोक्सिया की वजह से तेज़ी से उस हिस्से का पी एच लेवल गिरने लगता है और ट्यूमर के ये सेल एसिड बनाने लगते हैं। इस एसिड की वजह से पूरे शरीर में भयंकर दर्द शुरू हो जाता है। अगर इन सेल्स का तुरंत इलाज न किया जाए तो ये कैंसर सेल्स में तब्दील हो जाते हैं। डॉ. डैंग के मुताबिक बेकिंग सोडा मिला पानी पीने से शरीर का पी.एच. लेवल भी मेंटेन रहता है और एसिड वाली समस्या न के बराबर होती है। डॉ. डैंग ने बताया कि कई बार कीमोथैरेपी के बावजूद भी ऐसे कैंसर सेल्स शरीर में रह जाते हैं, जो बाद में दुबारा से शरीर में कैंसर सेल्स बनाने लगते हैं। इन्हें टी सेल्स कहते हैं। इन टी सेल्स को नाकाम सिर्फ बेकिंग सोडा से ही किया जा सकता है।

डॉ. वॉन डैंग ने कहा कि पहले भी ये बात आप सुन चुके होंगे कि बेकिंग सोडा कैंसर समेत कई बीमारियों का इलाज है। लेकिन अब हम प्रमाणिक तौर पर कह सकते हैं कि कैंसर का सबसे सस्ता और अच्छा इलाज बेकिंग सोडा से मिला पानी है। उन्होंने बताया कि जिन लोगों पर हमने प्रयोग किए उन्हें दो हफ्तों तक पानी में बेकिंग सोडा मिलाकर दिया और सिर्फ 2 हफ्ते में उन लोगों के ट्यूमर सेल्स लगभग खत्म हो गए।

इसकी विधि:

एक चम्मच बेकिंग सोडा, एक गिलास पानी में मिलाकर रोज सुबह शाम खाली पेट, एक महीने तक लें। उससे अधिक नहीं।

हर आत्मा अपनी अपनी यात्रा पर

गतांक से आगे ...

कोई भी आत्मा अपनी यात्रा पर हर समय चल रही है। हमें नहीं पता ये आत्मा कितने सालों से अपनी यात्रा कर रही है। लेकिन आज हम सिर्फ यह देखते हैं कि ये मेरा बच्चा मेरे घर में आया है। हमें ये नहीं पता कि इसने पिछले समय में क्या क्या किया। इसके पहले ये कहाँ था। इसके बाद कहाँ होंगे, कहीं और। इतना हमारा इकट्ठा है सिर्फ। अब जो इतना समय है 100 साल का जो हम इकट्ठे हैं तो हमें एक दूसरे के संस्कारों को रिजेक्ट नहीं करना, एक दूसरे के संस्कारों को समझना है कि इस आत्मा के साथ कभी न कभी कुछ हुआ होगा ना, तब उसके पास ये वाला संस्कार है। अब मेरा रोल एक फैमिली मेम्बर की तरह क्या है? उसको एक नया संस्कार क्रियेट करने में सहयोग देना लेकिन नया संस्कार क्रियेट करने से पहले मुझे उसको प्यार देना होगा, सम्मान देना पड़ेगा, शक्ति देनी पड़ेगी और उसके मुझे प्रेजेंट संस्कार को क्रिटीसाइज़ करना, रिजेक्ट करना नहीं है। गलत संस्कार लेकर आया है और हम उसकी निंदा करके-करके, उसका मज़ाक उड़ा-उड़ा के उसके वो संस्कार क्या कर देते हैं। कुछ बच्चों को पानी से डर लगता है, कुछ बच्चों को हाइट से डर लगता है, कुछ बच्चों को किसी जानवर से डर लगता है। छोटी-छोटी चीज़ें, पेरेंट्स को समझ में नहीं आती कि इनको ऐसे डर क्यों लगता है? अब पेरेंट्स उसको क्या बोलने लग जाते हैं। तुम तो बड़े डरपोक हो। और एक बार पेरेंट ने बोल दिया कि तुम डरपोक हो, आस पास के लोग भी बोलना शुरू कर देते कि तुम तो डरपोक हो। फिर वो बच्चा स्कूल गया, फ्रेंड्स ने कहा कि बड़े डरपोक हो। फिर लोगों ने क्या किया मज़ाक भी उड़ाया, निंदा भी की, उसके पास ऑलरेडी डर का संस्कार था, क्यों था क्योंकि कभी न कभी कुछ हुआ होगा। लेकिन उसका मज़ाक उड़ाया, उसकी निंदा की तो उसका वो डर का संस्कार क्या हो जायेगा? और बढ़ जायेगा। और क्या किया उसको दूसरे बच्चों के साथ कम्पेयर किया, उनको देखो

-ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

वो कोई डरते हैं! तुम डरते हो।

ये संस्कार हमारे साथ भी तो चल रहे हैं ना। हमें भी तो माता पिता ने ऐसे ही पाला है। उनके द्वारा हमें जो संस्कार मिले और हमारे जो संस्कार उन्हें दिखे, उन दोनों का कोई कम्पैरिज़न नहीं है। एक तो हम पूर्व जन्मों से लेकर आये और दूसरा माता पिता ने हमको दिया। तो किस संस्कार से हमें डर लग रहा है, ये हमें पता नहीं चल रहा है। इसलिए अगर हम बच्चे की किसी और से तुलना करते हैं तो बच्चा और नर्वस होता चला जायेगा। आप इसको उदाहरण के रूप में देख भी सकते हैं कि जब किसी बच्चे का मज़ाक उड़ाया जाता है तो बच्चा अगर ऐसे संस्कार वाला होगा तो वो सहम जाता है, और उसके अंदर ऐसे संस्कार और ज़्यादा भरते चले जाते हैं। इसलिए बच्चे को बूस्ट करना चाहिए, ना कि उनके अंदर वही वाले संस्कार और ज़्यादा पनपने देना चाहिए। उसको निकालने के लिए माता पिता को भरसक प्रयास करना चाहिए। - क्रमशः

पटना सिटी-गायघाट। मेयर श्रीमति सीता साहू को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. अर्चना, ब्र.कु. मनीष तथा ब्र.कु. चंचल भाई।

सीकर-राज.। कच्ची बस्ती में आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान बस्ती वालों के साथ रक्षाबंधन उत्सव मनाते हुए ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. मधु तथा अन्य।

अखनूर-जम्मू। विधायक राजीव शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. आशा।

कानपुर-वर्रा। युनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेस के वाइस चांसलर प्रो. डॉ. राजकुमार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निधि तथा ब्र.कु. तेजस्विनी।

भद्रक-ओडिशा। रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर कलेक्टर ज्ञान दास जी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. रत्नप्रभा।

नवरंगपुर-ओडिशा। झारखण्ड की राज्यपाल महोदया द्रौपदी मुरमू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नमिता। साथ हैं ब्र.कु. रंजीत।

हाजीपुर-बिहार। न्यायाधीश राजीव रौशन को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आरती। साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजली।

समस्तीपुर-बिहार। जिला एवं सत्र न्यायाधीश संजय कुमार उपाध्याय को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रानी दीदी।

पारलाखेमुंडी-ओडिशा। विधायक सूर्य नारायण को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. माला।

मनसा-हरियाणा। अग्रवाल सभा अध्यक्ष अशोक कुमार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदेश बहन।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

दुनिया में भी यह कहावत प्रचलित है कि कमाया, खाया बस, लेकिन बचाया कितना, इस पर हमारी ग्रोथ या उन्नति मानी जाती है। वही फॉर्मूला यहां भी काम करता है, यहां माना आध्यात्मिकता में, जब हम अपना बचत नहीं कर पाते तो हमें बहुत समय तक ज्ञान सुनने के बाद भी उन्नति फील नहीं होती।

हम सभी हर समय सेवा में अपने को बिज़ी रखते हैं, आप भी रखते होंगे, लेकिन वो सारा समय क्या हमारा सफल होता, या बचत होती? मान लीजिए आठ घंटे तक लगातार हमने सेवा की, लेकिन क्या वे आठ घंटे हमने सेवा की या कहीं थोड़ा थोड़ा वेस्ट भी हुआ या आधा भागदौड़ में, आधा सोचने में गया? उस समय यदि हमने थकावट महसूस की, इसका मतलब सेवा हमने नहीं की, हमने सिर्फ काम किया, उसमें हमारा तो कुछ जमा नहीं हुआ। जब भी हम कोई कर्म करते हैं, यदि उसमें श्रेष्ठ संकल्प, शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प लेते हैं, वही जमा माने जाते हैं, बाकी व्यर्थ ही माना जाता है।

हम जो भी कर्म करते हैं, उस कर्म में हमारे वायब्रेशन्स ज़्यादा काम करते हैं स्थूलता के स्थान पर। हमारी रूहानी सर्विस सिर्फ वायब्रेशन्स के आधार से ही है। जब भी हम कोई कर्म कर रहे हैं, उस कर्म में सबसे ज़्यादा यह देखा जाता है कि उस समय आप कितनी एकाग्रता से वह कर्म कर रहे हैं। सारा संसार इसी भाव से तो यह कहता आ रहा है कि हम सभी कर्मयोगी हैं, लेकिन कर्म करने से थकावट होती है और बार बार उसको औरों पर थोपते रहते हैं। उससे हम खुश तो नहीं हो पा रहे हैं ना! इसलिए किसी चीज़ से खुशी तो हमें तभी प्राप्त होगी ना जब हम उसे वैसे ही करें जैसे कोई काम किया और डिटैच हो गये। इससे हमारा क्रेडिट जमा होता जाता है। आज बस हम दुनिया में कमाते और खाते हैं, लेकिन यदि बचत ना हो, तो भय या घबराहट तो होती है ना। वैसे ही यहां भी आप खुशी, शांति से थोड़ी देर रहे, लेकिन यदि उसे उसी भाव से डिस्ट्रीब्यूट नहीं किया तो वह फिर बढ़ेगा नहीं। इसलिए इन बातों को जब तक हम बढ़ायेंगे नहीं, तब तक आध्यात्मिक जीवन में खुशी का अनुभव नहीं बढ़ेगा। कोई पूछेगा, अच्छा, यहां आने पर क्या सच में खुशी बढ़ जाती है, तो आपका कहना भी यही होगा, हाँ। लेकिन जो व्यक्ति समझता है, हमें तो परमानेंट खुशी बढ़ानी है, इससे अच्छा तो लौकिक कर्म ही अच्छा है जिसमें थोड़ी बहुत तो मिल ही जाती है। इसलिए हमें मन को थोड़ा और चमत्कारिक बनाने के लिए, कुछ नया करना होगा, क्योंकि परमानेंट खुशी के लिए तो आत्मिक स्थिति चाहिए। तभी तो वह कुछ करिश्माई सा लगेगा, जब हमारे पास जमा होगा। लोग कहेंगे ज़रूर यहां कुछ है और आगे आएंगे। अटेंशन प्लीज़।

नई दिल्ली। पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. आशा दीदी।

नई दिल्ली। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सविता।

फतेहपुर-उ.प्र.। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर थाना अधिकारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

फिरोज़पुर कैंट-पंजाब। सुखविंदर सिंह छीना, आई.जी.पुलिस को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उषा तथा ब्र.कु. शक्ति।

कोटद्वार-उत्तराखण्ड। स्टेशन मास्टर रामआसरे तथा अन्य रेलवे कर्मचारियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

सिवान-बिहार। सेवाकेन्द्र पर आयोजित राखी कार्यक्रम में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. कंचन माला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुधा।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-24 (2017-2018)

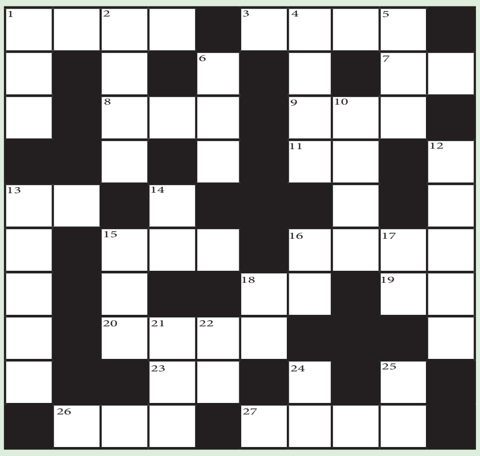

ऊपर से नीचे

1. बच्चा, ...सो मालिक बनना है (3)
2. अभी तुम्हारी.... अवस्था है इसीलिए किसी से मोह नहीं रखना है (4)
4. सर्पराज, मान्यता अनुसार अपने फन पर पृथ्वी को रखा (4)
5. देखना, अवलोकित करना (3)
6. एक वैरागी राजा, व देही (3)
10. करिश्मा, जादूगरी (4)
12. प्रभावशाली, गुणकारी (5)
13. बाबा ने आकर हम बच्चों को...दी है, शरण में लेना (5)
14. रहस्य, राज्य (2)
15. तपस्या, सिद्धि, आराधना (3)
16. ताकत, सांस (2)
17. कौआ, काक (2)
18. सूक्ष्म अंश, दाना (2)
21. मदद, बचाव, आराम (3)
22. मृत्यु के देवता, यमराज (2)
24. मूल्य, कीमत (2)
25. विशेषता, कला (2)

बायें से दायें

1. हमारा बाबा... है, माली (4)
3. गुण, कला, योग्यता (4)
7. कहानी, किस्सा (2)
8. मुख्य, प्रमुख (3)
9. नृत्य करना, उछलना, कूदना (3)
11. दु:ख, तकलीफ, सदमा (2)
13. हया, लाज (2)
15. शिव...आया है अपनी सजनियों को साथ ले जाने (3)
16. जरूरत, आवश्यकता (4)
18. अल्प, थोड़ा (2)
19. विष्णु जी का चारों अस्त्रों में से एक (2)
20. नर से...बनना है, विष्णु (4)
23. ...उड़ के चले जायेंगे (2)
26. दर्जा, कक्षा, समुदाय (3)
27. सफलता, उद्देश्य की सिद्धि (4)

- ब्र.कु. राजेश, शांतिवन।

मणिपुर-इम्फाल। माननीय मुख्यमंत्री एन.बिरेन सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलिमा।

अजमेर-राज.। सेवाकेन्द्र पर राखी कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास मंत्री अनिता भदेल ब्र.कु. शान्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए। साथ हैं ब्र.कु. रूपा तथा ब्र.कु. आशा।

कानपुर रोड-लखनऊ। लेफ्टिनेंट जनरल जे.के. शर्मा,सी.ओ.एस.,सेंट्रल कमांड एवं उनकी धर्मपत्नी को राखी बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. दिव्या, ब्र.कु. माधुरी व अन्य।

ग्रेटर नोएडा-वेटा टू जी II। आर.बी.एम.आई. ग्रुप्स ऑफ इंस्टीट्यूशन्स की चेयरपर्सन वीणा माथुर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् आध्यात्मिक चर्चा करते हुए ब्र.कु. ललिता तथा ब्र.कु. जयन्ती।

जगाधरी-हरियाणा। भाजपा मंडल अध्यक्ष एवं मार्केट कमेटी चेयरमैन संजीव गर्ग को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. अंजु।

दिल्ली-केशवपुरम। लॉरेन्स रोड ट्रैफिक पुलिस को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. राधा, ब्र.कु.शिवानी तथा ब्र.कु. अजीत।

प्रसन्नता

वृक्ष को अगर देखें तो हम पायेंगे कि उसमें कितनी शिक्षायें भरी हुई हैं। वह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में अपनी छाँह, पुष्प, फल, जलावन, लकड़ी और प्राणवायु देता है। पेड़ कुछ कहते नहीं, लेकिन उनका कर्म, उनका अस्तित्व बहुत कुछ कहता है, सिखाता है। वे हर ऋतु का दिल खोलकर स्वागत करते हैं और हर रंग में ढ़ल जाते हैं। बसंत, सावन, पतझड़ और फिर एक नई शुरुआत का स्वागत। यही एक महान शिक्षक के भी गुण हैं। ये छात्रों को ऊर्जावान बनाये रखते हैं जिससे संघर्षों की धूप में छात्रों का रंग पीला नहीं पड़ता, बल्कि घना वृक्ष हरा हो जाता है। तो हम जब भी इन वृक्षों को देखें, तो सिर्फ देखें नहीं, बल्कि उन्होंने जो हमें दिया है उसके बारे में सोचें भी। यदि हम सही मायने में उसे जान पाये तो हम उसके प्रति कृतज्ञ हो जायेंगे।

खलील जिब्रान ने लिखा है, 'पेड़ कविता है, जिसे पृथ्वी आकाश को छूने के लिए लिखती है।' जैसे कि अलबर्ट आइंसटीन कहते हैं 'वह शिक्षक ही होता है, जो हमें रचनात्मक अभिव्यक्ति से लैस करता है।' 'पेड़ हमें महान शिक्षक की भांति कुछ सिखाते हैं, समझाते हैं- ऊंघते और अनमने पेड़।' तो चलते हैं पेड़ों की ज्ञान भरी छांव तले, शायद वे शिक्षक बन एक अमृत फल टपका दें।

मानव का प्रकृति से गहरा संबंध है। वृक्ष पर्यावरण की दृष्टि से हमारे परम रक्षक और मित्र हैं। वृक्ष हमें अमृत प्रदान करते हैं। हमारी दूषित वायु को स्वयं ग्रहण करके हमें प्राण वायु देते हैं। वृक्ष हर प्रकार से पृथ्वी के रक्षक हैं जो मरूस्थल पर नियंत्रण करते हैं। नदियों की बाढ़ों से रोकथाम व जलवायु को स्वच्छ रखते हैं। पेड़ों की एक और विशेषता है जिसकी तरफ अभी संसार का ध्यान नहीं गया है। प्रत्येक पेड़-पौधा एक छोटा सा विद्युत(ऊर्जा) ग्रह भी है। **जैसे ही हम किसी पेड़ को देखते हैं, उस पेड़ की विद्युत हमें मिलने लगती है, हमारे रोग ठीक हो जाते हैं।**

हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ जाती है। यही कारण है कि ऋषि जंगलों व पहाड़ों पर तपस्या करते थे। कई ऐसे रोग होते हैं जिनके हो जाने पर डॉक्टर्स पहाड़ों पर पेड़ों के बीच रहने के लिए भेज देते हैं। क्योंकि वहाँ वृक्षों से पर्याप्त मात्रा में विद्युत मिलती है।

जब हम थके हुए होते हैं तो किसी हरे-भरे बाग में जाने से थकावट दूर हो जाती है। असल में हमें पौधों से ऊर्जा मिलती है। जिससे हमारी थकावट उतर जाती है। रंग-बिरंगे फूलों और पत्तों को देखकर खुशी होती है क्योंकि उनमें प्रचुर ऊर्जा होती है। अगर हम किसी पौधे को देखते ही यह सोचें कि आप कल्याणकारी हैं या कोई सकारात्मक शब्द बोलते हैं तो उसकी ऊर्जा हमारे में आने लगती है और हमें अच्छा-अच्छा लगने लगता है। कोई गुलाब के फूलों से स्वागत करे तो हमें कितना अच्छा लगता है। अक्सर स्नेह प्रकट करने का यही उत्तम ढंग है दूसरों को फूल देना। परंतु इसके पीछे फूलों की ऊर्जा है जो हमें आकर्षित करती है, सुकून देती है।

जिन पेड़ पौधों से प्रचुर मात्रा में बिजली मिलती है - वह है केला, कैक्टस, गुलाब, अगिया घास, आक, बैंगन, आलू, टमाटर, पपीता, हरी मिर्च, अमरूद आदि वृक्ष एवं सब्जियों के पौधे। इन पौधों की विद्युत से हम बल्ब भी जगा सकते हैं। आपके आस-पास जो भी पौधे हैं या कहीं आते-जाते देखते हैं तो उन पौधों को सकारात्मक विचार दिया करो। इससे उनकी ऊर्जा आप में आने लगेगी और आपकी खुशी बढ़ेगी। जितना ज़्यादा पौधों को तरंगें देंगे, उतना ही आपका मानसिक बल बढ़ेगा और आप सहज योगी बन जायेंगे।

दिल्ली-राजेन्द्र नगर। विधानसभा क्षेत्र विधायक विजेन्द्र गर्ग को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बाला। साथ हैं ब्र.कु. अभिनव।

खल्लीकोट-ओडिशा। मजिस्ट्रेट जनमेजय पोलिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योत्सना।

दिल्ली-बुराड़ी। निगम पार्षद अनिल त्यागी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लाज बहन।

दिल्ली-हरिनगर। सुधांशु श्रीवास्तव,सीनियर एक्ज़ीक्युटिव एडिटर,हिन्दुस्तान हिन्दी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शालू।

दिल्ली-करोल बाग। पूर्व प्रधानमंत्री माननीय मनमोहन सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. आशा दीदी।

कादमा-हरियाणा। बाढ़ड़ा के विधायक सुखविंदर सिंह मांढी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वसुधा तथा ब्र.कु. ज्योति।

गोपालगंज-बरहरिया। भारतीय मानवाधिकार के जिलाध्यक्ष ब्र.कु. जे.पी. भाई को राखी बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. कान्ति।

वहल-हरियाणा। चौधरी बंसी लाल युनिवर्सिटी,भिवानी के वाइस चांसलर प्रो. आर.के. मित्तल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शकुन्तला।

मेरठ-शास्त्रीनगर(उ.प्र.)। जिला जेल सुपरीन्टेंडेंट बी.डी. पाण्डेय को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बीना।

निहाल सिंह वाला-पंजाब। एस.एच.ओ. दिलबाग सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूजा।

टेलीपैथी बनाम मनोपैथी

विचार तरंगों का आदान प्रदान तथा प्रसारण जिस प्रक्रिया द्वारा सम्पन्न होता है, उसे टेलीपैथी कहते हैं। ये तरंगें बिना इन्द्रियों का सहारा लिये भेजी जाती हैं। इस क्रिया में भौतिक सीमायें बाधा नहीं बनती हैं। इसमें मन की एकाग्रता ही आधार है। अगर गहरे स्तर की एकाग्रता हो, तो इससे भौतिक उपचार भी हो सकता है।

मानव मस्तिष्कों के बीच मानसिक विचारों का आदान-प्रदान रेडियो संचार से अधिक तीव्र गति से होता है। समुद्र के अत्यंत निचले भाग में रेडियो तरंगें भंग या बाधित हो जाती हैं परंतु मानसिक तरंगों में वहां भी रुकावट नहीं आती। विचारों का आदान-प्रदान उनमें अधिक सफलतापूर्वक होता है जिनके भावनात्मक सम्बन्ध अच्छे होते हैं।

मानव शरीर टेलीविज़न प्रणाली से अधिक अद्‌भुत इलेक्ट्रॉनिक यंत्र है। शरीर से अधिक शक्तिशाली मानसिक तरंगे हैं जो एक दूसरे को प्रभावित करती हैं। विचार शक्ति की जितनी जानकारी मिली है उससे अधिक अभी तक इस शक्ति का ज्ञान नहीं है। जिस दिन इसका पूरा ज्ञान मिलेगा वह चमत्कार होगा तथा परमाणु के समान महान शक्ति सम्पन्न होगा।

यू-ट्यूब पर जो भी टेलीविज़न आदि के प्रसारण हैं, वह सब रेकॉर्ड होते रहते हैं। आकाश में ओजोन परत है जो सूर्य के प्रकाश के ताप से वायुमंडल को सुरक्षित रखती है। ऐसे ही आकाश में एक परत है जिसे ऑडियो स्फीयर कहते हैं। धरती का प्रत्येक मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक जो भी विचार करता है वह इस परत में रेकॉर्ड होते रहते हैं। समधर्मी विचार आपस में मिलते-जुलते हैं और घनीभूत होते रहते हैं। जिन विचारों की अधिकता होती है, वह मनुष्यों को प्रेरित करते हैं। वे सूक्ष्म वातावरण में प्रवाहित होते रहते हैं। इस समय बुरे विचारों की अधिकता है, इसलिये आज हर मानव नकारात्मक ही सोचता है। प्रयोग होने या न होने पर उनकी शक्ति घटती-बढ़ती है।

धरती पर मनुष्य या मनुष्यों का समूह जो विचार करता है या परिस्थिति जैसी भी बनती है, वैसे ही विचार ऑडियो स्फीयर परत से आने लगते हैं। रेडियो, टी.वी. आदि चलने से जैसी आवाज़ें हम सुनते हैं, वैसी ही तरंगें ऑडियो स्फीयर परत से आने लगती हैं। ऐसे ही अगर कोई व्यक्ति क्रोध, लोभ या किसी अन्य प्रकार की विचार धारा में बहता है, तो वैसी ही तरंगें ऑडियो स्फीयर परत से उस पर बरसने लगती हैं। जब हम ऐसे व्यक्तियों से मिलते हैं तो उनकी तरंगों का असर हमारे पर होने लगता है। अगर उनके साथ ज़्यादा समय बिताते हैं और वह ज़िम्मेवारी के पद पर है तो हमारी विचारधारा भी वैसी ही बनने लगेगी। अगर कोई व्यक्ति चाहे वह कहीं भी हो और वह जितनी तीव्रता से हमारे बारे में कुछ भी अच्छा बुरा सोचता है, वैसे ही हमारे विचार प्रभावित होने लगते हैं। ऐसे ही अगर हम किसी के बारे में सोचते हैं, तो उनकी विचारधारा प्रभावित होने लगती है।

विचारों से बने वातावरण का असर महसूस होता रहता है। मंदिर, मस्जिद या राजयोग केन्द्रों पर पावन सात्विक विचारों का आह्वान किया जाता है। उनका बार-बार आह्वान करने से उनका प्रभाव दिखने लगता है। इन स्थानों पर पहुंचने वालों के मन को शांति मिलती है। आशा की ज्योति जगती है। निराशा मिटती है। कसाई खानों में मारे गये पशु बहुत तड़पे थे, इसलिये इन स्थानों पर दु:ख भरा वातावरण रहता है। वहां कोई भी जायेगा तो दु:ख का अनुभव करेगा।

जहां योग का अभ्यास किया जाता है वहां जाने पर लगता है जैसे शांति की वर्षा हो रही हो।

चण्डीगढ़। हरियाणा के राज्यपाल महोदय सत्यदेव नारायण आर्य को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उत्तरा।

राँची-झारखण्ड। आर्च बिशप हाउस में आर्च बिशप कर्डिनल तेलेस्फोर पी. टोप्पो तथा राँची के होने वाले आर्च बिशप फेलिक्स टोप्पो को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निर्मला।

नेपाल-राजविराज। प्रमुख जिला अधिकारी सुरेन्द्र पौडेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. भगवती।

तोशाम-हरियाणा। उप विभागीय न्यायिक मजिस्ट्रेट सौरव गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चंद्रकला।

दिल्ली-लोधी रोड। वाई.सी.मोदी,आई.पी.एस.,डी.जी.,नेशनल इनवेस्टिगेशन एजेंसी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गिरिजा।

बल्लभगढ़-हरियाणा। सेक्टर 55 थाना के इंस्पेक्टर राम अवतार व स्टाफ को राखी बांधने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. सुशीला, ब्र.कु. सरोज तथा अन्य।

बिहारशरीफ-बिहार। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट एवं कलेक्टर डॉ. त्यागराजन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनुपमा।

राजसमंद-राज.। एस.पी. भुवन भूषण को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम। साथ हैं श्रीमति नम्रता भूषण व ब्र.कु. गोपाल।

श्यामनगर-प.बंगाल। बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर धरनी धर पात्र को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कमला।

रोहतक-हरियाणा। एल.पी.एस. बोसार्ड कम्पनी के एम.डी. राजेश जैन को राखी बांधते हुए ब्र.कु. रक्षा।

धुरी-पंजाब। डी.एस.पी. आकाश दीप को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. मूर्ति तथा ब्र.कु. सुनीता।

जगन्नाथपुरी-ओडिशा। गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रतिमा।

कुशीनगर-उ.प्र.। डी.एम. डॉ. अनिल कुमार सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मीरा।

नोएडा से.33-उ.प्र.। गौतम बुद्ध नगर के विधायक पंकज सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंजू।

उदयपुर-राज.। रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं उमा शंकर शर्मा,वाइस चांसलर,एम.पी.ए.यू.टी., चन्दर सिंह कोठारी,मेयर,नगर निगम,उदयपुर तथा ब्र.कु. रीटा।

दिल्ली-डिफेंस कॉलोनी। काउंसलर अभिषेक दत्त तथा उनके स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. अनुज तथा अन्य।

सिरमौर-हि.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर बीबी बलविन्दर कौर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. संध्या।

किशनगढ़ रेनवाल-राज.। सेवाकेन्द्र पर आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में नगरपालिका अध्यक्षा सुमन कुमावत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम। साथ हैं ब्र.कु. सुमित्रा तथा अन्य।

रूपवास-राज.। मजिस्ट्रेट सुनील जांगिड़ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. एकता, ब्र.कु. शिखा तथा अन्य।

सिरसागंज-उ.प्र.। नगरपालिका अध्यक्ष सन्त कुमार व उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. गीतांजली, ब्र.कु. शशी तथा ब्र.कु. मंजू।

सहरसा-बिहार। डी.एम. शैलजा शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. स्नेहा।

आत्म शक्ति से मज़बूत हैं, तो कोई समस्या तोड़-मोड़ नहीं सकती

- गतांक से आगे...

हताशा तभी आती है जब मन, वाणी और कर्म, ये तीनों अलग-अलग दिशा में हैं। पुरुषार्थ करने के बावजूद भी ये एक नहीं हो पा रहे हैं। तो ये है परमात्मा द्वारा स्पष्ट किया गया 'ओम ततसत्' का गहरा आध्यात्मिक रहस्य। अर्थात् जब ओम शब्द का उच्चारण करो तो उस वक्त ये जागृति अंदर में ले आओ कि मेरे मन, वचन और कर्म तीनों एक हैं, सुसंवादिता में हैं।

ओम शांति शब्द भी जब कहते हैं, तो उसका भाव भी यही है कि जब मन, वचन, कर्म तीनों एक होंगे तो जीवन में शांति का अनुभव होगा। 'ओम शांति' शब्द ये कोई हाय, हेलो, गुडमॉर्निंग की तरह नहीं है। ये शब्द जागृति का है। मेरे मन, वचन, कर्म एक हैं। जितना उसको एक करते जायेंगे उतना जीवन में सुख, शांति, प्रसन्नता आने लगेगी। बहुत सुंदर जीवन का अनुभव हम इस जीवन में रहते हुए कर सकते हैं। जहाँ जीवन जीने का भी एक संतोष, एक आनंद, एक तृप्ति का अनुभव कर सकते हैं। ये है जीवन जीने की कला। इस चुनौतियों भरे युग में भी अगर ये तीनों अलग-अलग दिशा में चले गये, तो व्यक्ति को कितनी खींचातानी का अनुभव जीवन में करना पड़ता है, कितना संघर्ष बढ़ जाता है। लेकिन अगर चुनौतियों भरे युग में ये शक्ति हमारी इकट्ठी हो गई है, ये सारे तत्व हमारे एक हो गये तो हमारे जीवन में शक्ति आने लगेगी। जिस शक्ति के आधार पर कोई हमें भीतर से तोड़ नहीं सकता है। कोई समस्या हमें तोड़ नहीं सकती है।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

एक बार एक बुज़ुर्ग था और उसके तीन बेटे थे। ये तीनों बेटे सारा दिन आलसी होकर के अपना सारा समय व्यतीत करते रहते थे। कोई खास काम-धंधा नहीं करते थे। उस बुज़ुर्ग ने जीवन भर उनका पालन-पोषण करते हुए बड़ा तो किया लेकिन जैसे ही उसको अपना अंतिम समय नज़दीक आता हुआ दिखायी दिया, उसको चिंता होने लगी कि ये जो मेरे बेटे हैं कोई काम-धंधा नहीं कर रहे हैं। इस तरह से जीवन में कैसे चलेगा? ये तीनों आपस में भी लड़ते रहते हैं। तो फिर उनकी शक्ति का भी क्या होगा? कोई भी उनका गलत उपयोग कर लेगा, गलत दिशा पर ले चलेगा, संग-दोष लग जायेगा। तो जैसे उसको चिंता होने लगी। एक दिन उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और तीनों बेटों को बुलाते हुए, लकड़ी की एक गठरी मंगवाई। लकड़ियां सारी इकट्ठी थीं। एक बेटे को बताया कि ये गठरी खोल दो। उसने उन लकड़ियों को अलग-अलग किया। तीनों को एक-एक लकड़ी उठाने के लिए कहा। एक-एक लकड़ी तीनों ने उठा ली। अब बुज़ुर्ग ने कहा इनको तोड़ दो। तो तीनों ने एक ही झटके में दो टुकड़े कर दिए। उसके बाद बुज़ुर्ग ने कहा कि ये जो बची हुई लकड़ियां हैं, इनको वापस बांध दो। जब लकड़ी का बंडल बंध गया, तो उस बुज़ुर्ग ने कहा कि अब इस बंडल को तोड़ने का प्रयत्न करो। बच्चों ने कहा कि बंडल कैसे टूटेगा? बुज़ुर्ग ने कहा बेटे, यही तो मैं समझाना चाहता हूँ। अगर आप लोग अलग होकर लड़ते-झगड़ते रहे, तो आपकी शक्ति को कोई भी तोड़ देगा। आपका दुरुपयोग करेगा, आपको गलत दिशा में ले जायेगा। अगर आप इस बंडल की तरह बंधे रहे तो किसी की ताकत नहीं जो आपको तोड़ सके, आपको गलत दिशा पर ले जा सके। इसीलिए संगठन की शक्ति का महत्व है। - क्रमश:

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय
ओमशान्ति मीडिया, संपादक -
ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,
शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.-
5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096,
9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

यह जीवन है...

सुन्दता की कमी को अच्छा स्वभाव पूरा कर सकता है, लेकिन स्वभाव की कमी को सुन्दरता से पूरा नहीं किया जा सकता।
मौन से जो कहा जा सकता है,
वो शब्द से नहीं और
जो दिल से दिया जा सकता है,
वो हाथों से नहीं!
बुरे में अच्छा ढूंढो, तो कोई बात बने,
अच्छे में बुराई ढूंढ़ना, ये तो दुनिया का रिवाज़ है।

ख्यालों के आईने में...

सोच?

बारिश के दौरान सारे पक्षी आश्रय की तलाश करते हैं, लेकिन बाज बादलों के ऊपर उड़कर बारिश को ही अवॉइड कर देते हैं। समस्याएं कॉमन हैं, लेकिन आपका नज़रिया इनमें अंतर पैदा करता है। इसलिए अपने सोचने के नज़रिये को चेंज करें।

विश्वास?

विश्वास में वो शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में प्रकाश लाया जा सकता है। विश्वास पत्थर को भगवान बना सकता है और अविश्वास भगवान के बनाए इंसान को भी पत्थर दिल बना सकता है।
विश्वास की नींव पर टिके हैं सारे रिश्ते।

टुण्डला-रामनगर(उ.प्र.)। एस.डी.एम. डॉ. सुरेश कुमार, सी.ओ. संजय वर्मा, एस.एच.ओ. बी.डी. पाण्डे, आगरा भ्रष्टाचार संगठन निरीक्षक राजीव यादव, थाना इंचार्ज एल.एस. पौनिया तथा आगरा न्यायालय के पेशकार आयुक्त प्रदीप कुमार शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विजय बहन तथा ब्र.कु. तनु।

कथा सरिता

सुदामा गरीब क्यों?

सुदामाजी को गरीबी क्यों मिली? आज तक आपको ये जानकारी नहीं होगी कि सुदामा जी गरीब थे तो क्यों?

सुदामा को गरीबी क्यों मिली : -

अगर आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो सुदामा जी बहुत धनवान थे। जितना धन उनके पास था किसी के पास नहीं था। लेकिन अगर भौतिक दृष्टि से देखा जाये तो सुदामाजी बहुत निर्धन थे। आखिर क्यों?

एक ब्राह्मणी थी जो बहुत निर्धन थी। भिक्षा मांग कर जीवन यापन करती थी। एक समय ऐसा आया कि पाँच दिन तक उसे भिक्षा नहीं मिली। वह प्रतिदिन पानी पीकर भगवान का नाम लेकर सो जाती थी। छठवें दिन उसे भिक्षा में दो मुट्ठी चने मिले। कुटिया पे पहुँचते-पहुँचते रात हो गई। ब्राह्मणी ने सोचा अब ये चने रात में नहीं खाऊंगी, प्रातः काल वासुदेव को भोग लगाकर तब खाऊंगी। यह सोचकर ब्राह्मणी ने चनों को कपड़े में बांधकर रख दिया और वासुदेव का नाम जपते-जपते सो गयी।

देखिये समय का खेल :-

कहते हैं, पुरूष बलि नहीं होत है, समय होत बलवान।

ब्राह्मणी के सोने के बाद कुछ चोर चोरी करने के लिए उसकी कुटिया में आ गये। इधर-उधर बहुत ढूंढ़ा, चोरों को वह चनों की बंधी पोटली मिल गयी। चोरों ने समझा इसमें सोने के सिक्के हैं। इतने में ब्राह्मणी जाग गयी और शोर मचाने लगी। गाँव के सारे लोग चोरों को पकड़ने के लिए दौड़े। चोर वह पोटली लेकर भागे। पकड़े जाने के डर से सारे चोर संदीपन मुनि के आश्रम में छिप गये।

संदीपन मुनि का आश्रम गाँव के नज़दीक था जहाँ श्री कृष्ण और सुदामा शिक्षा ग्रहण कर रहे थे।

गुरूमाता को लगा कि कोई आश्रम के अन्दर आया है। गुरूमाता देखने के लिए आगे बढ़ीं तो चोर समझ गये कि कोई आ रहा है, चोर डर गये और आश्रम से भागे! भागते समय चोरों से वह पोटली वहीं छूट गयी। और सारे चोर भाग गये। इधर भूख से व्याकुल ब्राह्मणी ने जब जाना कि उसकी चने की पोटली चोर उठा ले गये। तो ब्राह्मणी ने श्राप दे दिया कि मुझ दीनहीन असहाय के जो भी चने खायेगा वह दरिद्र हो जायेगा। उधर प्रातःकाल गुरू माता आश्रम में झाड़ू लगाने लगीं तो झाड़ू लगाते समय गुरू माता को वही चने की पोटली मिली। गुरू माता ने पोटली खोल के देखी तो उसमें चने थे। सुदामा जी और श्री कृष्ण जंगल से लकड़ी लाने जा रहे थे। रोज़ की तरह गुरू माता ने वह चने की पोटली सुदामा जी को दे दी। और कहा बेटा! जब वन में भूख लगे तो दोनों लोग यह चने खा लेना। सुदामा जी जन्मजात ब्रह्मज्ञानी थे। ज्यों ही चने की पोटली सुदामा जी ने हाथ में लिया त्यों ही उन्हें सारा रहस्य मालूम हो गया। सुदामा जी ने सोचा! गुरूमाता ने कहा है कि यह चने दोनों लोग बराबर बांट के खाना। लेकिन ये चने अगर मैंने त्रिभुवनपति श्री कृष्ण को खिला दिये तो सारी सृष्टि दरिद्र हो जायेगी। नहीं नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा। मेरे जीवित रहते मेरे प्रभु दरिद्र हो जायें मैं ऐसा कदापि नहीं करूंगा। मैं ये चने स्वयं खा जाऊंगा लेकिन कृष्ण को नहीं खाने दूंगा। और सुदामा जी ने सारे चने खुद खा लिए। दरिद्रता का श्राप सुदामा जी ने स्वयं ले लिया चने खाकर। लेकिन अपने मित्र श्री कृष्ण को एक भी दाना चना नहीं दिया।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। गृह राज्यमंत्री किरेन रिजिजू को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् साथ हैं ब्रह्माकुमारी बहनें।

इलाहाबाद-उ.प्र.। सांसद श्याम चरण गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुष्मा।

चुरू-राज.। पुलिस अधीक्षक राम मूर्ति जोशी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुमन।

सर्वोच्च से हो सम्बंध

एक बार ऐसा हुआ कि एक पंडित जी थे। पंडित जी ने एक दुकानदार के पास पाँच सौ रुपये रख दिये, उन्होंने सोचा कि जब बच्ची की शादी होगी, तो पैसा ले लेंगे, थोड़े दिनों के बाद जब बच्ची सयानी हो गयी, तो पंडित जी उस दुकानदार के पास गये। उसने नकार दिया कि आपने कब हमें पैसा दिया था। उसने पंडित जी से कहा कि क्या हमने कुछ लिखकर दिया है, पंडित जी इस हरकत से परेशान हो गये और चिन्ता में डूब गये।

थोड़े दिन के बाद उन्हें याद आया कि क्यों न राजा से इस बारे में शिकायत कर दें ताकि वे कुछ फैंसला कर दें एवं मेरा पैसा कन्या विवाह के लिए मिल जाये। वे राजा के पास पहुँचे तथा अपनी फरियाद सुनाई। राजा ने कहा, कल हमारी सवारी निकलेगी, तुम उस लाला जी की दुकान के पास खड़े रहना। राजा की सवारी निकली। सभी लोगों ने फूलमालाएँ पहनायीं, किसी ने आरती उतारी। पंडित जी लाला जी की दुकान के पास खड़े थे। राजा ने कहा, गुरू जी आप यहाँ कैसे? आप तो हमारे गुरू हैं। आइये इस बग्घी में बैठ जाइये, लाला जी यह सब देख रहे थे, उन्होंने आरती उतारी, सवारी आगे बढ़ गई। थोड़ी दूर चलने के बाद राजा ने पंडित को उतार दिया और कहा कि पंडित जी हमने आपका काम कर दिया। अब आगे आपका भाग्य।

उधर लाला जी यह सब देखकर हैरान थे कि पंडित जी की तो राजा से अच्छी साँठ-गाँठ है। कहीं वे हमारा कबाड़ा ना करा दें। लाला जी ने अपने मुनीम को पंडित जी को ढूँढ़कर लाने को कहा। पंडित जी एक पेड़ के नीचे बैठकर कुछ विचार कर रहे थे। मुनीम जी आदर के साथ उन्हें अपने साथ ले गये। लाला जी ने प्रणाम किया और बोले, पंडित जी हमने काफी श्रम किया तथा पुराने खाते को देखा तो पाया कि हमारे खाते में आपका पाँच सौ रुपया जमा है। पंडित जी, दस साल में ब्याज के बारह हज़ार रुपये हो गये, पंडित जी आपकी बेटी हमारी बेटी है।

अतः एक हज़ार रुपये हमारी तरफ से ले जाइये तथा उसे लड़की की शादी में लगा देना, इस प्रकार लाला जी ने पंडित जी को तेरह हज़ार रुपये देकर प्रेम के साथ विदा किया, जब मात्र एक राजा के साथ सम्बन्ध होने भर से विपदा दूर हो जाती है, तो हम सब भी अगर दुनिया के राजा , दीनदयालु भगवान से अगर अपना सम्बन्ध जोड़ लें.... तो आपकी कोई समस्या, कठिनाई या फिर आपके साथ अन्याय का कोई प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता।

नेपाल-राजविराज। प्रदेश नं.2 के प्रहरी दंगा नियंत्रण कार्यालय के जवानों को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में एस.पी. गोविंद कुमार साह, ब्र.कु. सरस्वती, ब्र.कु. संतोषी, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. दीपक व अन्य।

फरीदाबाद से.21-हरियाणा। होमरटन स्कूल के प्रिन्सीपल कुलदीप सिंह एवं टीचर्स स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. सपना तथा डॉ. बीना।

नैनीताल-उत्तराखण्ड। जिला न्यायाधीश वी.के. सुमन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम।

पटना-बिहार। डी.एम. रवि कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. संगीता।

फाज़िलनगर-उ.प्र.। कुशीनगर के जिलाधिकारी अनिल सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. भारती। साथ हैं ब्र.कु. सावित्री, ब्र.कु. उदय भान तथा ब्र.कु. शांति।

छपरा-बिहार। जिला जेल सुपरीन्टेंडेंट मनोज सिन्हा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनामिका। साथ हैं ब्र.कु. आकृति।

भीलवाड़ा-राज.। संगम ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज़ के चेयरमैन रामपाल सोनी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता।

धनौला-बरनाला(पंजाब)। रिटायर्ड सी.एम.ओ. ज्ञानचंद जी एवं उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड एवं प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. बृज बहन।

बिना मेहनत कुछ नहीं

हमने अखबार की कुछ कटिंग्स देखी उसका एडोरियल पढ़ने के लिए। किसी की कहानी आलोचनात्मक ढंग से पेश की गई थी, उसमें मर्म था, दर्द भी था, उपहास भी था। लेकिन लगता था कि निश्चित रूप से इसने मेहनत बहुत की है, अपने को उठाने में, तभी शायद सभी उसको पेश कर रहे हैं नज़राने में। एक छोटी सी सरकारी नौकरी का कॉम्पिटिशन इतना है कि बच्चे उसके लिए जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं, तो भी उसे पा नहीं पा रहे। जितने भी बड़े पद हैं भारत सरकार की ओर से, जिसको सबसे ऊँची जॉब कहा जाता है, वो हमसे कितनी मेहनत मांगता है। लोग अठारह से बीस घंटे तक लगातार लगे ही रहते हैं। चाहे संगीत हो, नृत्य हो, अभिनेता, अभिनेत्री हों, जिन्हें अपने रोल को परफेक्ट बनाने के लिए दिन रात जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती है। एक ओलम्पिक मेडल के लिए कितना कुछ करना पड़ता है, आठ आठ, दस दस साल उस पर लगाते हैं, तब जाके हमें कुछ मिलता है।

वैसे ही हमें यदि इस आध्यात्मिक क्षेत्र में कुछ करना है तो दिन रात जी तोड़ मेहनत करने की ज़रूरत है। आप क्या सोचते कि कर्मातीत अवस्था या इनलाइटेन्ड स्टेज बहुत आसान है! इसके पहले तो हमें हर पल, हर क्षण मेहनत करनी पड़ेगी। और वो मेहनत भी विधिपूर्वक हो, तब जाकर कहीं काम बनेगा, जिनका भी अध्यात्म में नाम है, उन्होंने अपने ऊपर काम किया और इतना किया कि दुनिया की सुध बुध भूल गए।

किस्मत देखकर किसी की आप हैरान होते होंगे, लेकिन आपको होना नहीं चाहिए, क्योंकि उसके पीछे उनकी इतनी मेहनत छुपी होती है, लेकिन वो नज़र उनके रुतबे, ओहदे को देखकर आती। आप सोचते उनके पास इतना कुछ कैसे? कितने किस्मत के धनी। नहीं। राज़ है।

यहां थोड़ा सा योग कर लिया, थोड़ी देर कुछ पढ़ लिया, सुन लिया, हो गया कोटा पूरा। यह तो किसी सतसंग की तरह ही तो हो गया। जहां बातें बता दी जाती हैं, हम करें ना करें। यहां तो हमें तराशने का काम चल रहा है। परमात्मा हर पहलू को तराशना चाहता है, जैसे कोई भी एक्टर परफेक्ट होने के लिए अपने हर एक पहलू पर काम करता है। उसे अच्छी एक्टिंग के लिए उसके टोन पर, एक्सन्ट पर, शब्दों के उच्चारण पर, उसके थ्रो पर, डायलॉग डिलीवरी पर, अच्छी हिन्दी, शुद्ध हिन्दी पर काम करना पड़ता है। वैसे ही हम भी तो अध्यात्म में हीरो एक्टर की भूमिका निभाना चाहते हैं, तो कितना अपने गुणों, शक्तियों आदि को तराशना पड़ेगा। हर पल हमें अवेयर रहना पड़ेगा कि कैसे इसे हम चेंज करें। अपने को फुल टाइम ऑबज़र्व करना पड़ेगा कि मैं कैसे सीखूं। परमात्मा हमें इतना महान देखना चाहते हैं तो महान बनने के लिए आप सोचो क्या नहीं सहना होगा, समाना होगा। संयम की शैया पर सोना होगा, नींद का त्याग करना पड़ेगा। तब जाकर हम कहीं परफेक्ट मानव की श्रेणी में अपने को गिन सकते हैं। हमारी रूहानी पर्सनैलिटी ऐसी हो कि कोई हमें देखकर इससे जुड़, इसे फॉलो करने लग जाये। आप शायद यह भी सोच सकते हैं कि आप लिखते तो हो, आप करते भी हो, जी हाँ, निश्चित रूप से करने की कोशिश कर रहे हैं, तभी तो यहां पर ध्यान जा रहा है।

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

आध्यात्मिकता बातचीत, भाव स्वभाव, संस्कार तक उतर जाए, इतनी मेहनत की आवश्यकता है हमें। आप चाहे इस क्षेत्र से पच्चीस साल से जुड़े हों या दस या बारह साल, कोई फर्क नहीं पड़ता है। फर्क यह पड़ता है कि इतने सालों में कितनी स्थूल बातों, माना यहां की बातों से आप प्रभावित हैं। अगर प्रभावित हैं, अच्छा लगता है, सब यहां का पसंद या नापसन्द आता है, मतलब दस प्रतिशत ही हमारे आपके अंदर ज्ञान या समझ का कुछ गया है।

आध्यात्मिक व्यक्ति इन बातों से कोसों या मीलों दूर होता है, उसे पता होता है कि सच में वह मेहमान है, जो मेहमान है उसे याद ना रहे, ये हो नहीं सकता। क्या ये बस गाने के लिए है कि यह दुनिया एक मुसाफिर खाना है, नहीं, सच में सबकुछ छोड़ के ही तो जाना है ना, तो क्यों ना हम काम करें अपने ऊपर, उस अवॉर्ड को लेने के लिए जो भगवान से हमें मिलने वाला है।

नोएडा से.26-उ.प्र.। केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री डॉ. महेश शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुदेश बहन।

बड़ौत-उ.प्र.। नगरपालिका चेयरमैन अमित राणा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मोहिनी।

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दे

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

24x7 Ad. Free Value Based Channel

Peace of Mind CHANNEL

TATA Sky 1065 airtel digital TV 678 Videocon d2h 497 dish tv 1087

+91 8104 777 111 | info@pmtv.in | www.pmtv.in

सामने वाला बदले, उसकी अपेक्षा स्वयं को बदलकर परिणाम पायें

प्रश्न : मेरे परिवार में दो छोटे बच्चे, पतिदेव, सासू माँ और ससुर जी हैं। सासु माँ के साथ अनबन होती रहती है जिसका गुस्सा बच्चों और पतिदेव पर भी निकाल देती हूँ। लाख चाहने के बाद भी सासू माँ से मेरी तालमेल नहीं बन पा रही है। मुझे लगता है कि मैं सही हूँ और वो जो कह रही हैं वो गलत है। हमारी अनबन ठीक नहीं हो पा रही है, तो मुझे कैसे क्या करना चाहिए?

उत्तर : आपको यही सोचना है कि मुझे ठीक करना है। क्योंकि ज्ञान आपके पास है, दूसरे व्यक्ति का संस्कार कैसा भी हो, विचारों का भेद तो इस संसार में चलता आता है। लेकिन बात यही है कि उनके विचारों के साथ अपने विचारों को समन्वय कर देना, हार्मनी कर देना। सास सोचती होगी कि घर की मालिक मैं हूँ, मैं आदेश दूँ, बहू को उसका पालन करना है। और बहू को कोई चीज़ प्रिय नहीं लगती होगी। ये घर घर में बात होती रहती है तो यहाँ आपको बड़ा बनकर क्योंकि आप रियलाइज़ कर रही हैं, उनको रियलाइज़ होगा या नहीं होगा वो तो वो जानें। आप रियलाइज़ कर रही हैं कि गड़बड़ हो रही है। इससे गुस्सा बच्चों और पति पर उतरता है। वो सोचते होंगे हमने तो कुछ किया नहीं, हम पर गर्म क्यों हो रही है। तो नुकसान हो रहा है। और गुस्सा उतारना भी ज़रूरी है, नहीं तो आप टेंशन लेकर घूमती रहेंगी। फिर कहें किसको? तो ये विधि अपनायें... रोज़ सवेरे यही संकल्प करें कि ये बहुत अच्छी आत्मा है। मेरी गुड फ्रेन्ड है। है तो मेरी बड़ी ही ना। मुझे उनकी बात माननी है। मुझे लाइट होकर चलना है। मुझे उनको सम्मान देना है। तो निश्चित रूप से उनमें परिवर्तन होगा। लेकिन आपको

मन की बात - राजयोगी

अपने में ये परिवर्तन अवश्य करना है कि बड़ों को मान भी देना है, उनकी हर बात को काटने के बजाय कहीं हाँ भी कर देना। मैं तो ये कहूँगा कि एक सप्ताह आप उनकी हर बात को हाँ करने लगो। भले ही आपको लगता है कि ये गलत कह रही हैं, पर कहीं कोई बिज़नेस का बड़ा नुकसान तो नहीं होने जा रहा है, वो तो घरेलू बातें होती हैं। हाँ माता जी आप बिल्कुल ठीक कहती हैं, एप्रीशियेट करने लगो, तो एक सप्ताह में ही खेल बदल जायेगा।

प्रश्न : नोटबंदी पर बहुत सारे विचार लोगों के आ रहे हैं, कई इसे अच्छा मानते हैं तो कई इसे बुरा मानते हैं। तकलीफ तो हमें भी हो रही है। आपके विचार जानना चाहते हैं कि आप इस पर क्या कहेंगे? अध्यात्म इस पर क्या कहता है?

उत्तर : देखो, नोटबंदी तो हो गई है, ये पार्ट तो पूरा हो गया है। कोई भी एक कदम जब उठाया जाता है, तो थोड़ी परेशानी तो होती ही है। प्राइम मिनिस्टर इंदिरा गांधी ने जब 1000 का नोट बंद किया था, तब भी हाहाकार हुआ था। लेकिन मैं ऐसा देखता हूँ कि इन लोगों के मन में जो भारत के भविष्य को लेकर एक विज़न है, ये उस विज़न को पूर्ण करने के लिए कार्य करते हैं। विदेशों में ऐसे ही कैशलेस पेमेंट होते हैं। काफी अच्छा रहता है। किसी को पैसा लेकर चलने की ज़रूरत नहीं, चोरी का डर नहीं। सबकुछ ठीक ठाक होता है। सरकार को भी टैक्स अच्छी तरह प्राप्त हो जायेगा। कठिनाई तो सभी को हुई है, लेकिन थोड़ा कठिनाइयों को सहना तो पड़ता ही है। कठिनाई भी हमें इसलिए हुई क्योंकि हम उस आदत में नहीं रहे। अब हम नई व्यवस्था और नए भारत के सपने को लेकर आगे बढ़ रहे हैं तो थोड़ी मुश्किलातों को सहन कर हम हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए अच्छा भारत दें, यही तो हमारा सपना है ना। तो ये भी थोड़े दिन में सामान्य हो जायेगा। आप इस बारे में ज़्यादा सोचें नहीं और अपने मन को व्यवस्थित करें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

भदोही-उ.प्र.। औरैया के विधायक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विजयलक्ष्मी। साथ हैं ब्र.कु. बृजेश।

बाराबंकी-उ.प्र.। एस.पी. वी.पी. श्रीवास्तव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनुराधा।

जम्मू-सुंदरवनी। डेप्युटी कमाण्डेंट जोगिन्दर सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजकुमारी।

मोकामा-बिहार। आर.पी.एफ. ट्रेनिंग सेंटर में राखी बांधने के पश्चात् कमाण्डेंट युगल किशोर त्रिपाठी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. बहन।

सीतापुर-उ.प्र.। ए.सी. आयोग के उपाध्यक्ष विकेश खोलिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गिरजेश बहन।

डेरापुर-उ.प्र.। एस.ओ. लाल सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीति।

महुआ-बिहार। इन्सपेक्टर तथा एस.एच.ओ. सुनील कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दिव्या।

फरीदाबाद से.19-हरियाणा। सोशल जस्टिस एंड वेलफेयर युनियन स्टेट मिनिस्टर कृष्णपाल गुर्जर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. हरीश बहन।

भादरा-राज.। डी.एस.पी. राजेन्दर बेनिवाल तथा उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चन्द्रकान्ता।

दिल्ली-लोधी रोड। डॉ. अरुण पंडा,आई.ए.एस.,सचिव,भारत सरकार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गिरिजा।

रामगढ़-राँची। कैन्टोन्मेंट बोर्ड के सी.ई.ओ. सपन कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. आशा।

राजयोग मेडिटेशन से मिटती है थकान

अनुभव

पिछले तैंतीस वर्षों से सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया में वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में कार्यरत प्रो. डॉ. रोमेश गौतम ने ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू के कैम्पस में आकर अलग अलग तरह के शक्तिशाली अनुभव किये। आपके नाम बहुत सारे अवॉर्ड हैं। आपका नाम लिम्का बुक आफ अवॉर्ड्स में भी दर्ज है। आपने ब्रह्माकुमारीज़ के साथ बिताये कुछ सुनहरे पलों को इस तरह बयां किया...

प्रो. डॉ. रोमेश गौतम, नई दिल्ली

माउण्ट आबू के स्पार्क कॉन्फ्रेन्स के लिए मैं यहाँ आया। इसके पहले मैं ब्रह्माकुमारीज़ से थोड़ा बहुत परिचित था। कहा जाता है कि हर चीज़ का एक वक्त होता है। 1991 में मुझे वकालत करते हुए थोड़े साल हुए थे, मुझे घर की ज़िम्मेवारियां थीं, इसलिए शायद मेरा इस तरफ ध्यान नहीं गया। हमारा ध्यान किस तरफ लेकर जाना है, वो भी परमात्मा सब डिसाइड करता है। अब एक महीने से मैं ब्र.कु. महेन्द्र भाई के सम्पर्क में हूँ। उन्होंने मुझे स्पार्क की कॉन्फ्रेन्स के लिए बुलाया कि इसमें सीनियर एडवोकेट्स को, जजेस को, जो भी सेलिब्रिटीज़ हैं को हम बुलाते हैं जो अच्छे वक्ता भी हैं। शुरू शुरू में मुझे लगा कि मैं क्यों जाऊंगा। मैं इनको जानता नहीं हूँ। इन्होंने फोन किया, मैंने गलती से रिसीव कर लिया अननोन नम्बर को। लेकिन वही अननोन नम्बर, वही अननोन लोग एक महीने में या छः सात दिन के अन्दर मेरी फैमिली के मेम्बर बन गये। तो ये परमात्मा का चमत्कार नहीं है तो और क्या है? और मैं आप सब लोगों के साथ बैठा हूँ, अपने परिवार में बैठा हूँ, तो ये परमात्मा ने मुझे सही दिशा दिखाई और उस रास्ते पर मैं ऑटोमेटिकली चलता गया। यहां हम जिससे मिलते हैं उसके चेहरे पर मुस्कान है, उसके चेहरे पर खुशी है। वो ऐसे मिलते हैं जैसे पिछले कई जन्मों से हमारे रिश्ते हैं। और आत्मा का जो रिश्ता है, रूहानियत का रिश्ता, वो ज़्यादा इम्पोर्टेन्ट है। लेकिन मैं इसमें ये भी कहना चाहूंगा कि हमारा खून का रिश्ता भी है। हम सबका एक ही खून है, क्योंकि हम सबके माँ बाप जो हैं वो एक ही परमपिता परमात्मा हैं। इसलिए हम लोगों में खून का रिश्ता भी है। और इस खून के रिश्ते में भी हम लोग आपस में जुड़ते जा रहे हैं। ये ऑर्गनाइज़ेशन जिस तरह से काम कर रहा है बहनों के अपलिफ्टमेंट के लिए, समाज में बुराइयां हटाने के लिए, हमारी अच्छी और हेल्दी लाइफ के लिए ये मेडिटेशन जो कर रहे हैं, वो काबिले तारीफ है। मैंने भी मेडिटेशन किया, जिससे मैंने 10 घंटे की नींद आधे घंटे में पूरी करना सीखा। इतने बड़े ऑर्गनाइज़ेशन में इतना अच्छा मेंटेनेन्स जहाँ पर आपको कहीं भी मिट्टी नज़र नहीं आयेगी। ये भी काबिले तारीफ है। मैं हर देश में घूमा हूँ, पूरे वर्ल्ड में चक्कर लगाये हैं अपने लीगल वर्क के लिए, लेकिन इतनी सफाई और इतना अच्छा वातावरण मुझे कहीं भी देखने को नहीं मिला। इतने अच्छे लोग विदेश में किसी भी कोने में चले जायें वो नहीं मिलेंगे। मेरी इस ऑर्गनाइज़ेशन को बहुत बहुत शुभ कामनाएं हैं और मेरा वादा है कि अब मैं बहुत जल्दी जल्दी आता रहूंगा। साल में तीन से चार बार तो ज़रूर आऊंगा।

जयपुर-राजापार्क। खान विभाग मंत्री सुरेंद्र पाल को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सनु,कांजी नगर सेवाकेन्द्र।

फरीदाबाद से.19-हरियाणा। मानव रचना युनिवर्सिटी में वाइस चांसलर एन.सी. वारहेड एवं सीनियर फैकल्टी मेम्बर्स को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हरीश तथा ब्र.कु. ज्योति।

डिबरुगढ़-असम। डिबरुगढ़ युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. रंजीत तामुली को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बिनीता।

वलिया-उ.प्र.। चेयरमैन को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन तथा ब्र.कु. पुष्पा।

अकलेरा-झालावाड़(राज.)। विधायक कंवर लाल मीणा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. केसर।

जगन्नाथपुरी-ओडिशा। जिला न्यायाधीश अंबुजा मोहन दास को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रस्मिता।

बरेली-सिविल लाइंस(उ.प्र.)। महापौर डॉ. उमेश गौतम को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीता।

बैरिया-उ.प्र.। रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् एस.एच.ओ. गगन राज सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा। साथ हैं ब्र.कु. समता।

ग्रेटर नोएडा। आई.आई.एम.टी. ग्रुप्स ऑफ कॉलेज के डायरेक्टर राहुल गोयल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. जयंती।

बरेली-बजरिया पूरनमल। कमिश्नर पी.बी. जगमोहन को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. जया।

खगड़िया-वेला सिमरी। गंगौर थाना अध्यक्ष गजेन्द्र कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. आशा।

झालावाड़-राज.। वल्लभ पिट्टी ग्रुप धागा फैक्ट्री के मैनेजर कविम जैन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीना।

आध्यात्मिक ज्ञानोदय द्वारा व्यापार में स्वर्णिम युग

सम्मेलन में देशभर से आठ हज़ार से अधिक व्यापारी एवं उद्योगपति हुए शरीक

मध्य में दादी जानकी के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. योगिनी, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. मोहन तथा अन्य।

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ के बिज़नेस एवं इंडस्ट्री विंग के द्वारा 'आध्यात्मिक ज्ञानोदय द्वारा व्यापार में स्वर्णिम युग' विषय पर आयोजित सम्मेलन में देशभर से आये सभी व्यापारियों को सम्बोधित करते हुए मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि व्यापार में परमात्मा को साथी बनाकर व्यापार करेंगे तो तन और मन के साथ परिवार में भी शांति और समृद्धि आयेगी। जहां परमात्मा का साथ है, वहां सब कार्य सहजता और सरलता से हो जायेंगे और हम अपने कार्य को ईमानदारी से करेंगे तो बरकत होगी, भय नहीं रहेगा।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.योगिनी बहन ने कहा कि व्यापार में अध्यात्म को शामिल कर लें तो व्यापार में भी स्वर्णिम युग आ जाएगा। फिर व्यापार भी ईमानदारी और सच्चाई सफाई का व्यापार बन जाएगा। इस दौरान उन्होंने डायमंड हॉल में उपस्थित सभी मेहमानों को राजयोग की गहन अनुभूति भी कराई।

विंग के वाइस चेयरपर्सन एम.एल. शर्मा ने अपने जीवन का अनुभव साझा करते हुए कहा कि मुझे बचपन से ही परमात्मा की खोज थी। ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर मेरा पूरा जीवन बदल गया। जीवन में कई परेशानियां आईं, लेकिन सभी ऐसे निकल गईं जैसे मक्खन से बाल निकलता है। जब हमारे जीवन में मूल्य होते हैं तो हम जो भी कर्म करते हैं वह भी फलदायी और सुखदायी होते हैं। परमात्मा के आशीर्वाद से आज व्यापार दिन रात बढ़ रहा है।

प्रसिद्ध बिज़नेसमैन सागर जेठानी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर पता चला कि जीवन की असली सक्सेस है खुद को जानना और खुदा को जानना। यदि जीवन में सुख, शांति और आनन्द है तो वही जीवन की असली सफलता है। हम कितना भी पैसा कमा लें लेकिन यदि जीवन में आनंद नहीं तो वह पैसा व्यर्थ है।

प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. गीता ने सभी मेहमानों का स्वागत किया। साथ ही इस कॉन्फ्रेंस का पूरी तरह से सभी से लाभ लेने का आह्वान किया। आरंभ में पालघर से आईं बालिकाओं ने सुंदर स्वागत नृत्य की प्रस्तुति दी। ब्र.कु. हरीश भाई ने कॉन्फ्रेंस की रूपरेखा रखी। ब्र.कु. मोहन ने आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री माननीय डॉ. रमन सिंह ने किया ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग ट्रेनिंग एंड रेसिडेन्शियल रिट्रीट सेंटर का भूमि पूजन और शिलान्यास

राजनांदगांव छ.ग.। राजनांदगांव में ब्रह्माकुमारीज़ के रिट्रीट सेंटर का उद्घाटन करते हुए माननीय मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने कहा कि ये संस्था मानव को तनाव तथा परेशानियों से मुक्त करने हेतु मानवता की सेवा के साथ साथ चरित्र उत्थान का भी कार्य पूरी तन्मयता से कर रही है। समाज को श्रेष्ठ बनाने के लिए इस संस्था के सदस्य जो कार्य कर रहे हैं, वो सराहनीय ही नहीं, प्रशंसनीय भी है। इस निर्माण कार्य में सहयोग देने हेतु हम सदा आगे रहेंगे।

मेरा मानना है कि छत्तीसगढ़ के लिए ये ट्रेनिंग सेंटर एक बड़ी उपलब्धी से कम नहीं है। इस रिट्रीट सेंटर में एक पंद्रह सौ लोगों को बैठने के लिए आधुनिक सुविधा से लैस ऑडिटोरियम होगा, दो सौ प्रशिक्षणार्थियों के रहने की उत्तम व्यवस्था, एक आर्ट गैलरी, एक मेडिटेशन हॉल जैसी सुविधायें उपलब्ध होंगी। यहाँ के लोगों को कई अन्य प्रकार की सेवायें भी प्रदान की जायेंगी, जैसे मेडिकल, इंजीनियरिंग, सोशल एक्टीविटीज़, ट्रान्सपोर्टेशन आदि। ब्रह्माकुमारीज़ के बीस विभिन्न प्रभागों द्वारा सम्बंधित क्षेत्र के लोगों के लिए इस रिट्रीट सेंटर में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। ये सभी के लिए बहुत ही बड़ा एवं महान अवसर है।

कार्यक्रम में क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला, क्षेत्रीय संयोजिका ब्र.कु. हेमलता तथा ब्र.कु. आशा उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुख्य रूप से जिला मंत्री राजेश मुनत, विधायक अभिषेक सिंह, मेयर मधुसुदन यादव, सिविल सप्लाई निगम अध्यक्षा नीलू शर्मा, बाल विकास अध्यक्षा शोभा सोनी, सिविल सप्लाई निगम के पूर्व अध्यक्ष लीलाराम भोजवानी सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा ने सभी मेहमानों का स्वागत किया।

ब्रह्माकुमारीज़ का एडिटर्स मीट सम्पन्न, अनेक प्रमुख संपादक हुए शामिल

मीडिया में समाज को बेहतर बनाने की ताकत

मीडिया प्रभाग अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा, वरिष्ठ पत्रकार एन.के. सिंह तथा मुख्य संपादक गण कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए।

भोपाल-म.प्र.। हम सब एडिटर्स एक साथ मिलकर यह संकल्प करें कि ईश्वर ने समाज को बेहतर बनाने का कार्य हम एडिटर्स को दिया है, उसे हम सब मिलकर करेंगे। उक्त विचार ब्र ह्माकुमारीज़ के मैनेजिंग ट्रस्टी एवं मीडिया प्रमुख राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई ने 'एडिटर्स मीट' के दौरान व्यक्त किये। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि का स्मरण करते हुए बताया कि दादी जी अक्सर कहती थीं कि स्वपरिवर्तन से विश्वपरिवर्तन। ईश्वर भी एडिटर्स से चाहते हैं कि पहले आप अपने में परिवर्तन लाएं तो आपकी कलम की ताकत से समाज पर प्रभाव पड़ेगा और समाज अवश्य ही बेहतर बन जाएगा।

दिल्ली से आये वरिष्ठ पत्रकार एन.के. सिंह ने कहा कि आज मीडिया में दिखाए जाने वाले कई विज्ञापनों में रिश्तों की मर्यादा का ध्यान नहीं रखा जाता। मीडिया के माध्यम से प्रचार प्रसार करने के लिए पहले नैतिक मूल्यों को कमज़ोर करने का कार्य किया जाता है, उसके बाद लोगों को अपनी ओर मोड़ना आसान हो जाता है। उन्होंने कहा कि जब जनता मीडिया को हेय दृष्टि से देखने लगे तो यह एक खतरनाक स्थिति है। एडिटर्स को बिना सकारात्मक उद्देश्य के अपनी निष्पक्षता नहीं छोड़नी चाहिए।

वरिष्ठ पत्रकार व मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति के राष्ट्रीय संयोजक प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि संपादक यदि ठान ले तो वह कुछ भी कर सकता है। वह बिना किसी दबाव के अपनी बात रख सकता है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ एवं मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम के द्वारा मीडिया में मूल्यों की स्थापना के लिए किये जा रहे प्रयासों की चर्चा की।

सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रीना ने कहा कि यदि मीडिया एवं आध्यात्मिकता साथ मिलकर कार्य करे, तो वह दिन दूर नहीं जब एक ऐसा संसार स्थापित हो जाएगा जैसा हम चाहते हैं। उन्होंने कार्यक्रम में आए सभी एडिटर्स का स्वागत किया तथा कॉमेन्ट्री के माध्यम से राजयोग की अनुभूति कराई।

वरिष्ठ पत्रकार गिरिजा शंकर ने कहा कि अब बोलने का नहीं बल्कि सोचने का समय है। संपादक को यह समझ होनी चाहिए कि उन्हें क्या बात कहनी और क्या भूमिका निभानी है।

पत्रिका के स्थानीय संपादक पंकज श्रीवास्तव ने कहा कि आज भी कुछ मीडिया संस्थान ऐसे हैं जिनमें निष्पक्ष एवं बिना दबाव के कार्य करने की स्वतंत्रता है।

नई दुनिया के संपादक सुदेश गौर ने कहा कि यदि संपादक चाहे तो समाज को सरोकारी स्थान बनाया जा सकता है।

वरिष्ठ पत्रकार रविन्द्र जैन ने कहा कि आज संपादकों को अनेक दबावों से गुज़रना पड़ता है। यदि हम संकल्पित हैं तभी समाज को बेहतर बना सकते हैं।

कार्यक्रम में अनेक वरिष्ठ संपादकों ने अपने विचार व्यक्त किये। जिनमें राधावल्लभ शारदा, ममता यादव, कृष्ण मोहन झा, रिजवान अहमद सिद्दिकी, सरमन नगेले, रविन्द्र सिंह मेहता, मधुकर द्विवेदी, विनोद सूर्यवंशी, विनोद नागर, आर.के. गुप्ता, सोमदत्त शास्त्री, रामेश्वर धाकड़, आशीष रत्नपारेख, देवेन्द्र जोशी, पवन देवलिया, महेश दीक्षित, विवेक शर्मा तथा दिल्ली से आईं कात्यायिनी चतुर्वेदी प्रमुख थे। इस अवसर पर दिल्ली से ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. सुशांत भी उपस्थित रहे।

पावर ग्रीड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के ऑफिसर्स के लिए त्रिदिवसीय कार्यशाला

ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए पी.जी.सी.एल. के जनरल मैनेजर श्रीवास्तव जी। साथ हैं ब्र.कु. तापोशी, ब्र.कु. दीपेन्द्र तथा ब्र.कु. विपिन।

वाराणसी। पावर ग्रीड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के एक्ज़ीक्युटिव ऑफिसर्स के लिए होटल गेटवे ताज में त्रिदिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रशिक्षण के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के सारनाथ सेवाकेन्द्र के भाई बहनों को आमंत्रित किया गया।

ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी ने कहा कि अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों और चुनौतियों के बीच अपने कार्यक्षेत्र एवं व्यक्तिगत और पारीवारिक जीवन में संतुलन रखते हुए आगे बढ़ना आवश्यक है। इसके लिए हमें अपनी आंतरिक शक्तियों को, मनोबल को बढ़ाने की ज़रूरत है। ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाया जाने वाला राजयोग आंतरिक मनोबल को बढ़ाने का सशक्त माध्यम है।

क्षेत्रीय प्रबंधक ब्र.कु. दीपेन्द्र ने कहा कि हमारा सशक्त मन ही हमारी कार्यक्षमता में कुशलता और सफलता दिलाता है। इसके लिए हमें अनेक साधनों के बीच रहते साधना को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाकर चलना होगा। विभिन्न राज्यों से आये एक्ज़ीक्युटिव ऑफिसर्स को संस्था की ओर से ब्र.कु. तापोशी ने स्ट्रेस मैनेजमेंट, मैनेजिंग माइंड एंड बॉडी आफ्टर सिक्सटी आदि विषयों पर ट्रेनिंग दी। ब्र.कु. विपिन ने कार्यक्रम के विषय पर प्रकाश डालते हुए देशभर से आये हुए ऑफिसर्स का आभार व्यक्त किया।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SRO/9623/18-20, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2018-20, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 12th Sep 2018
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं अमर उजाला प्रेस द्वारा मुद्रित।